

श्रीः ।
मौज
तरङ्ग-पहिली ।

अर्थात्
 उर्दू फासी के प्रसिद्ध कवियोंके मनोहर शेरोंका
 नागरी दोहा सौरठोंमें अनुवाद.

पं० बद्रीनाथचतुर्वेदी एम. ए.

आसिस्टंट सेक्रेटरी
 ज्युडीशियल बेंच हुजूरदरवार
 गवालियर

कृत.

खेमराज श्रीकृष्णदासके
 मुम्बई

“श्रीवेङ्कटेश्वर” छापाखानामें
 मुद्रितकराकर प्रकट किया ।

संवत् १९५५, शके १८२०.

All rights reserved.



प्रस्तावना.

कई वर्ष हुवे तब भाषा सीखनेकी अभिलाषासे Prof. Blackie के उपदेशानुकूल इस प्रकारके अनुवाद प्रारंभ किये गयेथे होते २ हरिकृपासे इनकी संख्या बढ़ गई और कई इष्टमित्रोंने भी इनको मुद्रित करनेके विषयमें आग्रह किया इसलिये पूर्व विचारके विरुद्ध इस प्रथम तरङ्गको छपवानेका साहस किया जाता है.

इस छुद्र पुस्तकमें कोई ऐसा विशेष गुण दृष्टिगोचर नहीं होता जिसके अवलोकनार्थ विद्वज्जनोंकी सेवामें प्रार्थना की जाय, परन्तु एक बात अवश्य सूचनीय है कि आजकल बहुधा एतद्देशीय उर्दू फारसी के ज्ञाता भाषाको ग्रामीन बोली मानकर उसके अलौकिक लालित्य और अनूठे रस माधुर्यसे अपरचित रह जातेहैं. इसी भाँति नागरीके अनेक रसिकजन अन्य भाषाओंकी कविताको नीरस और असंसकृत समझके आस्वादन किये बिनाही उसकातिरस्कार करने लगते हैं: आशाहै कि, ऐसे महाशयोंको उन चिन्त होके इस तरङ्ग की सर करना लाभदायक होगा. क्योंकि पृथे सूचित महाशयोंका एक पृष्ठ दोषाच्छादन यह है कि मनुष्यकी इतनी आयुष्य कहाँ है जो संपूर्ण भाषाओंका यथाचित सीख सके और एक भाषाकी कविताके सूक्ष्मभाव और वाक् लालित्य दूसरी भाषामें यथावस्थ कब प्रदर्शित हो सकते हैं? परन्तु हिंदी और उर्दूमें वस्तुतः अन्तर इतनाही है कि लिपि पृथक् पृथक् है तथा एकमें

संसकृत दूसरीमें अरबी फारसी शब्दोंका बाहुल्यहै. कुछकालसे एक हमोरही आलस्य और दुर्लक्षसे स्थाईभावका सुख भोग रही है, और दूसरी गह्वरमेंटकी कृपादृष्टिके कारण प्रतिदिन वृद्धिगतिको प्राप्त होती जाती है. इसके अतिरिक्त व्यवहार प्रचारादिकमें कोई भेद नहीं है. और उर्दूका अधिकार हो जानेसे फारसी ऐसी सरल हो जाती है जैसी हिंदी जाननेवालेको संस्कृत तो फिर ऐसी अवस्थामें अल्पायुका बहाना कैसे चल सकता है. इसीप्रकार दूसरा तर्क भी विचार करनेसे यथार्थ पाया नहीं जाता; क्योंकि वर्तमानकालमेंही हमारी आँखोंके सामने अंग्रेजी भाषाका नमूना उपस्थित है, जिसके अन्यशास्त्रोंको छोडकर केवल साहित्यकीही विस्मयकारक उन्नतिका कारण उसके असंख्यात अनुवाद

ग्रंथोंको कहना अन्यथा न होगा, इस कथनकी सत्यता सह ही विदित
हा सकता है, कोई उत्तमभाव चाहै जैसी भाषामें भूषित हो रन्तु सञ्चे
कविके चित्तरूपी रसायनयन्त्रमें पड़नेसे, जहां प्रायः हाल ङ्ल विषसे
भी अमृत बनताहै, कौनसा अलौकिक पदार्थ प्राप्त होगा यह बतानेकी
किसको सामर्थ्य है, महाकवि 'शेक्सपियर' : Shakespear के अनेक
प्रशंसनीय नाटक इस विषयके जगद्विख्यात उदाहरण हैं, और आगे
एक 'सोरटे' में कहा भी है,-

सो०-जाकारजपै कोय, साहस करि बाँधे मर ॥

चाहे शूलहि होय, छोरहि फूल बना के ॥

यह बात सर्वदा स्मरण योग्य है कि सकल उन्नतियोंका मूल हेतु भाषा-
न्नति हांती है और कोई कुछ कहै परन्तु 'हिंदुस्थान' की मूल भाषा
'हिंदी' और उसकी लिपि 'देवनागरी' ही हो सकती है अन्य भाषा
वा लिपि कदापि नहीं होसकती, बडे हर्ष का अवसर है कि 'ब
सबसे पहिले इस विषयका स्पष्टरूपसे बीड़ा उठाया गयाहै (खो'श्रीवि-
ङ्कदेशसमाचार, तारीख ५, १२ और १९ नवंबर १८९७ई० का) त्त स्तंभ)
और हमारे समाचारपत्रोंके ग्राहक अमेरिका, इंग्लंड, जर्मन , इत्यादि
द्वीपद्वीपान्तरोंमें होनेसे उनका परिश्रमभी सफलीभूत हं रहा है.
ऐसे २ कई एक शुभ शकुन दीख पडनेसे निश्चय होता है कि ह री मातृ-
भाषाके जीर्णोद्धारका वह सौभाग्यदिवस अब समीपही प्रा । होगया
है जिसके चिन्तवन मात्रसे प्रत्येक देशहितैषी पुरुषका व मलहदय
आनंदानिलके क्रीडा स्पर्शसे प्रफुल्लित हो जाता है.

ईसी शैलीके बहुत एक आग्रहोंके अनुकूल 'नागरीसाहित के 'सर-
स्वतीभंडार' में यह पुस्तक अर्पणकी जाती है, व्यवस्था : यादिकमें
जो दोष इसमें रहगये हैं उनको पाठकगण क्षमा करै; यदि ईश्वर पानुग्रहसे
इसकी द्वितीय आवृत्ति तथा इसकी सहचारी 'तरङ्गां' के प्र ताश कर-
नेका अवसर आया तो इन त्रुटियोंके सुधारनेका उद्योग कियो जायगा,
अन्तमें उन मित्रवर्गोंको जिनके उद्देश तथा सहायतासे इस पुस्तकके
मुद्रित होनेकी बारी आई है कोटिशः धन्यवाद प्रदानके हित यह
लेख संपूर्ण किया जाता है.

लक्ष्मणवालिपर.

भाद्र० शु० १० भृशुवार सं० १९५५. }

अनुवाद र्ता.

श्रीः ।
समर्पण.

दोहा ।

श्री अरु जय तित रहत नित, जित यदुनन्दप्रभाव ।
याते सूचित होउ प्रभु, माधो माधोराव ॥

श्रीमहाराजाधिराज !

यह तुच्छ पुस्तक किसी प्रकारकी ऐसी योग्यता नहीं रखती है जो श्रीमान्के चरणोंमें भेंट की जावे तथापि “पत्रं पुष्पं फलं तोयं” के न्यायानुसार इसको सत्य भक्ति पूर्वक अर्पित मानकर यदि श्रीमान् स्वीकार करें तो इस रीतिसे निज जनके परिश्रमको सफलीभूत करना प्रभुकी जगद्विख्यात दयालुता और देशाभिमानके समीप दुस्तर नहीं है.

आपका दासानुदास,
बद्रीनाथ चतुर्वेदी.

श्रीः ।

श्रीहुजूर नृपतेन्द्र श्रीमन्महाराजाधिराज
श्रीमाधवराव शिंदे आलीजाह वहादुर जी.
सी. एस. आई. ने निज भक्त प्रार्थनाको
९-३-९९ को स्वहस्ताक्षरसे स्वीकृत कर
अनुवादक को कृतकृत्य किया.

सूचीपत्र ।

सं.	विषय.	नंबर	पृष्ठ.	सं.	विषय.	नंबर	पृष्ठ.
१	मंगल, हरिस्तुति	१	२	घ	उदारता, कृपणता	१६०	४०
२	विनय	१३	४	च	वैराग्य	१८२	४४
३	उपासना, धर्म	२२	६	छ	जीवन, मरणादि	१९४	४८
अ	पश्चात्ताप, कलुष- गर्वता	३३	१०	६	आदरसत्कार	२२४	५४
४	ज्ञान	५०	१४	अ	अभिमान, दैन्य	२३१	५६
५	परमार्थ	७३	१८	७	सांसारिक गति	२४४	६०
अ	मनशुद्धि	८६	२२	अ	सुख दुःख	२५९	६२
क	सन्तोष, धैर्य	१०२	२६	क	अपचय उपचय	२७८	६८
ख	तृष्णा, लोभ, अधी- रता	१३०	३२	ख	दया, निष्ठुरता	२८५	७०
ग	सम्पन्नता, दारिद्र्य	१४१	३४	ग	नरपरिक्षा	२९५	७२
				घ	शत्रु-मित्र	३०६	७४
				०	टिप्पणी		८१

श्रीवैकुण्ठपतये नमः ।



श्रीगणेशायनमः ।

१ मंगलाचरण ।



हरिस्तुति ।

- दो०-ज्यों को त्यों तुहि लखिसकै, एती काकी सूझ ।
१-जेती जाकी सूझ है, तेती ताकी बूझ ॥
- दो०-तोहि बिलोकि सुकछुलख्यो, इन अँखियनलौलीन ।
२-पलक रसन पलछिन रटन, हमकत नयन विहीन ॥
- सो०-दृग तिल यह विस्तार, वाही कारीगर दियो ।
३-जल थल विम्ब अपार, सहजहि जाय समाय जिहि
- दो०-सुमन सुमनवन श्रवन बनि, पियत सुधारस बैन ।
४-मन २ रसना बनि भजत, पात तोहि दिन रैन ॥
- दो०-तेरीही धुनि मगन द्विज, करत शंख धनघोर ।
५-तेरे सुमिरन महजतन, मचत अजाँ को सोर ॥
- दो०-मूरत से इनसान की, दरसत तेरी सान ।
६-होत लिखे अखरान ते, अर्थ रूप परमान ॥
- दो०-जित देखो तित कहत सब, तोहि अनादि अनन्त ।
७-दिशि २तुव महिमा उदधि, उमह्यो अमित लसन्त ॥

بِسْمِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ا حمد

- | | | |
|-------|--|---|
| | ترا چنانکہ توئی ہر نظر بجا بیند | ۱ |
| | بقدر بیدیش تو دہر کسے کند ادرک | |
| ناسخ | میری آنکھوں نے تجھے دیکھ کے وہ کچھ دیکھا | ۲ |
| | کہ زبانِ قرہ پر شکوہ ہے بینائی کا | |
| احمدی | وہی صانع ہے جسے آنکھ کے تل میں یہ وسعت دی | ۳ |
| | سماجاتا ہے جسمیں عکس صد با کوس میدان کا | |
| ایضاً | گلستان میں گلون کے کان بہن آواز پر تیری | ۴ |
| | ترا ذکر خفی کرتا ہے ہر پیشہ زبان ہو کر | |
| " | تیری ہی دہن میں ناقوس بر بہن گرم نالہ ہے | ۵ |
| | تیری ہی یاد میں ہے مسجدوں میں غل اذانوں کا | |
| ذوق | ہے عیان جلوہ ترا انسان کی تھویر سے | ۶ |
| | صورت معنی ہو ظاہر لفظ کی تحریر سے | |
| احمدی | جہان دیکھو وہاں اقرار ہے تیری تھالی کا | ۷ |
| | ہر اک سو سو جن زن ہے بجز تیری کبریاٹی کا | |

दो०-धनी ऋणी इक सारिके, यादचोढीके दास ।

८-सो जाधे कंगाल हैं, जाधे जिन के पास ॥

सो०-दान उदाधिते नाथ, कौन सनाथ भयो नहीं ।

९-मुहर मीन अँग साथ; सीप हाथ मोती भरे ॥

सो०-छवि सरिता भइ गंग, तेरी किञ्चित झलक सों ।

१०-जो कोड लखत तरंग, समझत ज्वाला तूरकी ॥

दो०-दरदर भटकत नहिं फिहँ, मैं ही खोजत तोय ।

११-चन्द्र भानु निशादिन भमत, मानहु फनि मनि खं प

दो०-जरठ गमनको गमन लसि, शयोचित परकास ।

१२-करत निचलको सबल है, तेरी निच तलास ॥

२ विनय ।

१३ सो०-नाथ ! दानदे मोहि, पुरुषार्थ उत्साह अस ।

१-राजी राखूँ तोहि, रहूँ भगन इहि मौजमें ॥

१४ सो०-घट २ तेरो बास, जो तू होय प्रसन्न कहूँ ।

२-जगभर लुपा प्रकास, अनायास भो पै करहि ॥

१५ दो०-कौन लगावै मोहि मुँह, तू जु न पूछै बात ।

३-परछाँई लौँ मोरि मुख, मुकर मुकरमें जात ॥

سعدی	درویش و غنی بندہ این خاک دراند آنا مکہ غنی تراند محتاج تر اند	۸
غنی	کس ز فیض بحر جودت در جهان محروم نیست پیشت ماہی پر درم مشت صد پر گوہر است	۹
ناسخ	تیرے پر تو نے کیا گنگا کو دریا نور کا جس نے دیکھا لہر کو سجھا وہ شعلہ طور کا	۱۰
شناور	آوارہ اک ہمین نہ فقط در بدر پہرے کیا کیا تری تلاش میں شمس و قمر پہرے	۱۱
آتش	یہ گردنِ فلک پیر سے ہوا ثابت قوی ضعیف کو کرتی ہے جستجو تیری	۱۲

۲ مناجات

احمدی	عنایت کر مجھے وہ قوتین اور غم مردانہ رہون تیری رضا جوئی کی دُص میں دل سے دیوانہ	۱۳
غالب	سب کے دل میں ہے جگر تیری جو تو راضی ہوا مجھ پہ گویا اک زمانہ مسہ بان ہو جاے گا	۱۴
سودا	منہ لگا دے کون چمکو گرنہ پونچھے تو مجھے عکس بھی دیتا نہیں اب آئینہ میں رو بجھے	۱۵

१६ दो०-पाचन तो रूसे नहीं, मो सों हे भगवान ! ।

४-रूसे चाहे और जो, होत न मेरी हानि ॥

१७ दो०-छमा दाम ही देत कह, औरहु कछु दै जाउ ।

५-जबहिं आप गाहक भये, बढ्यो पापको भाउ ॥

१८ दो०-जो पूंजी मो पै रही, दर्ई सौंपि सो तोहि ।

६-अबतू आप सँभारिले, घटी बढी जो होहि ॥

१९ दो०-पंथ बताउ, बटाउ दुख, सकल कलेश नसाउ ।

७-उचित होय सो करि सबै, मोसों जिन कहिवाउ ।

२० सो०-दुरी न तोसों नाथ, जो बदरी मन कामना ।

८-यह बदरी को माथ, और पौरि तेरी यहै ॥

२१ दो०-हों अति चाउ प्रणामसे, भयो फरश इहि द्वार ।

९-परछाईं सम सीस सों पगलों बन्यो लिलार ॥

३ उपासना, धर्म ।

२२ सो०-वासों मिलन न होय, जोहू निज करतूत बल ।

१-तोहू चाहिये तोय, बस भरि करिबोजतन मन ! ॥

२३ दो०-हरि सेवा चितलाइये, नव तरुणाई पाय ।

२-सूखिजाय जबलाकरी, किहु बिधि नाहिं नवाय

	المی زمین معدہ من زرخد	۱۶
	برخند و گر بر که رخد بر رخد	
ناسخ	نقد آمر زین فقط کیا دو بجھے کچھ اور بھی	۱۷
	تم ہوئے جو مشتری یا ان زرخ عصیان بر گیا	
نظامی	سپر دم بتو مائے خویش را	۱۸
	تو دانی حساب کم و بیش را	
احمدی	میرا ہادی میرا مونس ہو میرا غم ربا تو ہو	۱۹
	جو ہونا چاہیے وہ ہونہ کوا مجھے کیا تو ہو	
"	مخفی نہیں ہے تجھے تنائے احمدی	۲۰
	یہ تیرا آستان ہے یہ سوائے احمدی	
ذوق	اس در پہ شوق سجدہ سے فرس زمین ہوں میں	۲۱
	ماند سایہ سر سے قدم تک جبین ہوں میں	
۳ عبادت و عدل		
داراشکوہ	گرچہ وصالش نہ بکوش بود	۲۲
	آنقدر ایدل کہ توانی بکوش	
صائب	بنو بہار جوانی اطاعت حق کن	۲۳
	کہ چوب خشک چو گردیدم نیم گرد	

- २४ दो०-बिहसत बदन बलायको, बदरी ले सिर भार ।
३-जो सांचो करतारको, है तू ताबेदार ॥
- २५ सो०-भौं सकोरि मत मीत, पहुंचै आय बलाय जो ।
४-भली न मूँदन रीत, दर अतीत दैवी विमुख ।
- २६ दो०-आयसु ते तू ईस की, बदरी नारि न फेर ।
५-जो फिर फेरै नारि नहीं, कोऊ तेरी बेर ॥
- २७ सो०-सुर समाजके काज, जेते नर सब करि सकति ।
६-करि न सकहिं सुरराज, पै नरके करतव्य जे ॥
- २८ सो०-सुरपद सकिये पाय, पै निज पौरुषते नहीं ।
७-याको अवस उपाय, हरिजन को सतसंग है ।
- २९ दो०-भोजन जीवन हेत अरु, भजन करनको साज
८-पै तेरे मन तो ठनी, जीवन भोजन काज ॥
- ३० सो०-करि अपनो करतव्य, अरु विशेष जिन चाहि क तु ।
९-तिसना थोरी सत्य, नीकी सेवा अधिकतें ॥
- ३१ दो०-भूलि कोपको राखिमत, किरपाहोप मँवार ।
१०-दामन भरी पयोधके, लखि दामिनि चिनगां
- ३२ सो०-धरम न्याव करि मीत, तो वरीकबिच फलमिं ।
११-जो उपासना रीत, दै न सकहि सौबरस में ।

فیضی	با ابرو کے کشادہ بلارا پذیراشو معبود را اگر بعبودیت اندری	۲۳
صائب	چون بلا سے میشود نازل مزین چین چین در بر و سے همان غیب لبستن خوب نیست	۲۵
سعدی	تو ہم گردن از حکم داوری بیچ کہ گردن نی پیچی ز حکم تو بیچ	۲۶
ذوق	جو فرشتے کرتے ہیں کر سکتا ہے انسان بھی پر فرشتوں سے نہو جو کام ہے انسان کا	۲۷
امیر خسرو	تو خود فرشتہ شو اما ز تو پیش تو توان شد بزر آنکہ صحبت خاصان کردگار بود	۲۸
سعدی	خوردن برائے زیستن و ذکر کردن است تو معتقد کہ زیستن از بجز خوردن است	۲۹
امیر خسرو	فرض بجا آر و مجویش از آنکہ حرص کم از طاعت بسیار بہ	۳۰
سودا	غافل غضب سے ہو کے کرم پر نہ رکھ نظر پڑ ہے شرار برق سے دامن حساب کا	۳۱
صائب	عدالت کن کہ در عدل انچہ کی ساعت بہت آید میسر نیست در ہفتاد سال اہل عبادت را	۳۲

३ (अ) पश्चात्ताप, कलुषगर्वता

- ३३ सो०-बदरी सकूं न आंख, न्याव हाटके भावके ।
१-पाप घोट मो कांख, छमा दाम कर रामके ॥
- ३४ दो०-लेत दयानिधि की दया, रोये धोये पाप ।
२-सौदा घटिको लाभ से, बिकत सींच हग अ प
- ३५ दो०-असित मेघ सित जातहै, बितरनके गुनतात ।
३-त्योही निर्मल होत मन, अरध निशा असुप ।
- ३६ दो०-है कावेकी आबरू, जो जमजमको सोत ।
४-तो मनमन्दिर स्वच्छता, नम अँखियन सोइ त
- ३७ सो०-बालक रोवत जात, खोय बाट निज सदनव ।
५-मैं रोऊँ किन तात, खोय दियो सदनैसही ॥
- ३८ दो०-बिन औसर वरषा भये, होतन खेती हेत ।
६-बूढ़े पनमें लाजमय, अँसुवाका फलदेत ॥
- ३९ सो०-खाली सीस दवात, यदपि सियाही सों भई ।
७-लिखत अजहुँ पैजात, सिसुलों पाटी पापकी ॥
- ४० सो०-जरा झराये दाँत, हरि सुमिरन मनना दियो ।
८-खेलि बालकनि भांत, सुमिरन दियो हिरायसो

الفعال و رندی

قدسی	قدسی ندانم چون شود سودا سے بازار بزا	۳۳
ذوق	او نقد آفرزش کبف من جنین عصیان و نعل خریدار اس کی رحمت جس عصیان گی ہے گریہ سے چمک کر بیچتا ہوں تفع سے سودا خسارے کا	۳۴
صائب	ریش سفید میکند ابر سیاہ را تو روشن شود دل از دل شہا گریستن	۳۵
ایضاً	آبرو کے کعبہ گزار چشمہ زمزم بود کعبہ دل را صفا از دیدہ میرنم بود	۳۶
"	طفل میگردد چو راه خانہ را گم میکند چون نگریم من کہ صاحب خانہ گم کردم	۳۷
"	باران بے محل نہد نفع کشت را تو در وقت پیری اشک ندیامت چو میکند	۳۸
عنی	ہر چند شد ہی ز سیاہی حووات سر مشق گنہ ہنوز چو اطفال می کینم	۳۹
ایضاً	ز پیری ریخت دندانم ندانم تن بیاد حق بیازی آخرا این تسبیح چون اطفال گم کردم	۴۰

- ४१ सो०-परै चूक बनि जोय, भाजि लाजकी सरनग ; ।
९-चूकत विथा न होय, दूतर यह अपराध ह ॥
- ४२ दो०-अम्बर तर अम्बर नहीं, भलोदिगम्बर छोर ।
१०-कारन या पोसाकमें उलट सुलट दुख थोर ॥
- ४३ दो०-सूखो ज्ञानी मूरखहि, पंथ बुझावन जोग ।
११-बाट टटोवत लकुटिलै, निपट आँधरे लोग ।
- ४४ दो०-ब्रह्मवेत्ता वावरे, स्वर्ग हमारे भाग ।
१२-पापिन के ही सीसपै, लसत छभाकी पाग ।
- ४५ सो०-दृग मरोरि जिन जोय, कर्म हमारे कर्मठी ।
१३-बरषत करुना तोय, इन कारे बदरानते ॥
- ४६ दो०-मेरे पापी होन को, प्रभु दयालुता हेत ।
१४-मेव मोहिं मद पानको, करत रहत संकेत
- ४७ दो०-नरक अनलते कबडरहिं करहिं जुनितमदपान
१५-पावक भख पंछीनको, ज्वाला सुमन समान ॥
- ४८ सो०-भोर प्रफुलित चित्त, तपन नरक सङ्कुचाउँना ।
१६-गुलअनार रँग नित्त, रहूँ आँचमें लोह जिर्ना ॥
- ४९ दो०-कावे पहुँचे सेखजी, पाहन चूमन सौक ॥
१७-सब बुत चुम्बन जोगहे, जग मन्दिर में जाँव ॥

صائب	چون خطاے از تو سرزد و پریشانی گزیر از خطا نام نگردیدن خطاے دیگر است	۳۱
	کبھی عریانی سے بہتر کوئی دنیا میں لباس یہ وہ جامہ ہے کہ جس کا نہیں سیدھا اٹل	۳۲
غنی	سزد گزرا ہنڈشک است رہبر بے تمیزان را کہ نا مینا عصا را رہنماے خویش می سازد	۳۳
حافظ	نصیب ماست بہشت ایضا شناس برو کہ مستحق کرامت گناہگار آئند	۳۴
غنی	بچشم کم مبین و ز نامہ اعمال ما زاہد کہی بار ازین ابرسیہ باران رحمتا	۳۵
ناسخ	رحمت حق ہے سبب میری گنہ گاری کا ابر کرتا ہے اشارہ مجھے میخواری کا	۳۶
غنی	بادہ نوشان را غنی از آتش دوزخ چہ باک شعلہ شایخ گل بود مرغان آتش خوار را	۳۷
ذوق	ہوں وہ شگفتہ دل نہ دوزخ میں تنگ ہوں آہن کی طرح آگ میں بھی لالہ رنگ ہوں	۳۸
”	ایک پتھر چومنے کو شیخ جی کہیہ گئے ذوق ہر بہت قابل بوسہ ہوا اس بتخانہ میں	۳۹

४ ज्ञान ।

- ५० सो०-हरे ड्रुमन के पात, ज्ञानवानकी दृष्टि में ।
१-पात २ दरसात, ब्रह्म ज्ञान की संहिता ॥
- ५१ सो०-बदरी जो खुलजाय, मत अभेदको भेदतुहि ।
२-अजब रूप दरसाय, फूल सूख फिर लखैतो ॥
- ५२ सो०-कनिकाहै खरियान, बूँद विपुल सागर हमें ।
३-सूझत अखिल महान, चमतकार, लघु अंसमें ।
- ५३ सो०-बुलबुल देखन आउ, गुल घूँघट पट भानु मुखि
४-बौरे क्यों चित चाउ, भयो तोहि पटसों निपट
- ५४ सो०-अचरजकाजु पुनीत, दुन्यो रहे मुख मीतको
५-बीच उठाई भीत, मेरी माटी मूठि भर ॥
- ५५ सो०-देखहितो चलि देख, बदरी वह प्रीतम अलख ।
६-दीख परत सत पेख, चित्त झरोखा झिरीते ॥
- ५६ दो०-सब कछु वासों लखत वह, लख न परतज्योंदीठ
७-नयनन ही में रहत पै, नयनन रहत अदीठ ॥
- ५७ सो०-देखहु बदरी नाथ, देत बड़ाई लघुन को ।
८-दृगतिल कियोसनाथ, नभ अपार जिहिमेंदिसत

۴ معرفت

سعدی	برگ درختان سبز در نظر ہوشیار	۵۰
ہر دورے	دقت نسبت معرفت کردگار	
کھل جائین	کھل جائین تجھے معنی تو حیدر اگر آتش	۵۱
پھر دیکھے	پھر دیکھے تو دکھلائین گل و خار عجب روپ	
دانہ خرمن	دانہ خرمن ہے سین قطرہ ہے دریا ہکو	۵۲
آے ہے	آے ہے بزین نظر گل کا تماشا ہکو	
بیابیل	بیابیل بسین در پردہ گل آفتابے را	۵۳
چرا از	چرا از سادگی محبوب خود کردی نقایے را	
کیا عجب	کیا عجب پنہان جو روے شاہد مقصود ہے	۵۴
بیچ میں	بیچ میں دیوار کچی میری مشت خاک نے	
دیکھہ	دیکھہ گرد کینہ زوق کہ وہ پردہ نشین	۵۵
دیدہ	دیدہ روزن دل سے ہے دکھائی دیتا	
سب کو	سب کو دیکھا اُس سے اور اُسکو نہ دیکھا جون نگاہ	۵۶
وہ رہا	وہ رہا آنکھوں میں اور آنکھوں سے پنہان ہی رہا	
دیکھو	دیکھو چوٹوں کو ہے اللہ بڑائی دیتا	۵۷
آسمان	آسمان آنکھ کے تل میں ہی دکھائی دیتا	

- ५८ सो०-आपकरत प्रतिरोध, तू अपनो जग मुकरमें ।
९-कौन हतो जुबिरोध, तो सन धरतो नाहितो ॥
- ५९ दो०-ध्यान धरत जब मीतको, आपुन परत दिखाय
१०-नयनन सनमुख होतही, मनदरपन बनजाय ।
- ६० सो०-तोसों बाहिर नाहिं. जो कछु या संसारमें ।
११-आप आपुतो चाहि, जो चाहे ह्यां है तुही ॥
- ६१ सो०-हौं ऐसो दारियाव, प्रति बुद २ महलोक जहैं ।
१२-डुलत तरंग सुभाव,तुरत नयो सिरजत जगत।
- ६२ सो०-परछाईं लों धाय, फिहैं संग श्री अंगके ।
१३-जानूँ ना लपिटाय, रहूँ चिलग याते सदा ॥
- ६३ सो०-सुमन सुगंध सुरंग, वासों मम संबंध तस ।
१४-रहत परस्पर संग, डडत फिरत पै एकनित ॥
- ६४ सो०-मोहन करत निवास, मोहूसों भेरे निकट ।
१५-यह अचरज दुख रास,दूर रहति मैं कूर नित ॥
- ६५ सो०-कासों कहूँ सुनाय, कहा कखरी पीउ तो ।
१६-भेरे अंक सुहाय, पै मैं बिरह बिथा सहूँ ॥
- ६६ सो०-पलछिन आठहु याम, रहत हमारे निकटजो ।
१७-सो पूरन सुख घाम, सदा इन्द्रियनको अगम ॥

ذوق	آپ آئینہ ہستی میں ہے تو اپنا حریف ورنہ بیان کون تھا جو تیرا مقابل ہوتا	۵۸
ناسخ	جب تصویر یار کا باندھا تو ہم آکے نظر ساتھے آنکھوں کے آئینہ ہمارا دل ہوا	۵۹
	بیرون ز تو نیست انچہ در عالم هست از خور و طلب ہر انچہ خواہی کہ تویی	۶۰
ناسخ	ہوں وہ دریا جسمین ہے ایک عرش اعظم پر حجاب فلکی ایک لہر جسم اک جہان پیدا ہوا	۶۱
ذوق	ساتھ ان کے ہیں ہم سایہ کی مانند و لیکن اسپر بھی چھراہیں کہ لیٹنا نہیں آتا	۶۲
ایضاً	جسمین آئین ریلطہ ہو گویا بزرگ بوگلو وہ رہا آغوش میں لیکن گریزان ہی رہا	۶۳
سعدی	یار نزدیک تر از من بن است وین عجب تر کہ من از وحی دورم	۶۴
ایضاً	چہ کنم با کہ تو ان گفت کہ او عد کنار من و من ہر سجودم	۶۵
زینت	موجود ہے ہر آن جو نزدیک ہمارے وہ وہم و گمان سو کجی حقیقت میں پروردگار	۶۶

- ६७ दो०—नाथ अचंभो कौनयह, सूझ बूझ एहिठाय ।
१८—दौरीं लाख सर्की नहीं, आपुहि आप लँघाय ॥
- ६८ सो०—अली बुद्धि सँग जाय, एकगली लयग्रामकी ।
१९—तरकसूर अरुझाय, तार २ अँचरा भयो ॥
- ६९ सो०—रहे मनोरथ दूर, फँस्यो जायमन तरकबन ।
२०—मानिन सेनी कूर, ऊँची नीची भूमिको ॥
- ७० सो०—कै हो परम सुजान, कै रहु निपट अजान तू ।
२१—जाईँ प्यासते प्रान, मृम तृष्णामें बीचकी ॥
- ७१ सो०—भाषत विप्र विचार, सेख विशेष भनतवहे ।
२२—दोउन एकही सार, बोलीको कछु भेदहै ॥
- ७२ दो०—चन्द्र भानु अलिरैन दिन, पल छिन चैन न लेत ।
२३—यह फिराकमें कौनके, फिर २ फेरीदेत ॥

५ योगपरमार्थ ।

- ७३ दो०—जग उपकार निवार अरु, नहीं परमार्थ बाट ।
१—माला आसन गूदरी, बृथा बनावत ठाट ॥
- ७४ सो०—देखहु अचरजनैन, बंसीटेरीकहत सदा ।
२—बोलतलकरीबैन, सुर साधक की फूंकते ॥

درو	یارب یہ کیسا ظلم ہے اور اک و فہم بیان	۶۷
	دوڑے ہزار آپ سے باہر نہ جاسکے	
	باعقل گشتم ہم سفریک کو چہ را از خودی	۶۸
	شدر ریشہ ریشہ دانم از خار استدلال ہا	
غنی	دل با استدلال بستم اندم از مقصود دور	۶۹
	نردبان کردم تصور راہ ناہموار را	
عرفی	قدم برون مناز جبل یا قلاطون شو	۷۰
	کہ در میانہ کرنینی سراب تشنہ لبی ست	
ناسخ	جو ہے کلام شیخ وہی قول برہمن	۷۱
	مطلب ہر ایک فرق فقط ہر لغات کا	
کرم	خوشید و ماہ کوہین پیرتے ہی دیکھتا ہوں	۷۲
	یہ کسکی جستجو میں اوارہ سر بسرہ میں	

۵ طریقت

سعدی	طریقت بجز خدمت خلق نیست	۷۳
	تسبیح و ستجادہ و خلق نیست	
غنی	زبان نے باواز بلند این حرف میگوید	۷۴
	کہ می سازد بیکدم چوب را صاحب نفس گویا	

- ७५ दो०—साँसा आवा गमनको, जो तू करै विचार ।
३—श्वास २ पैकरि सकै, स्थिति प्रलय बिहार ॥
- ७६ दो०—अजब असत्ताको डगर, जो यह पंथ चलाय ।
४—पूरब गामिन सों मिलै, एकहि डगमें जाय ॥
- ७७ सो०—है यह मारग सोय, जिहि पहुँचै हरि लोकनर
५—द्वार हियेमें जोय, याजंगारी सिखिरको ॥
- ७८ दो०—हियकपाट खोलन चहत, खट खटाउ अधिरात
६—प्रातहोत सबदर खुलत, पै यहदर मुँदिजात ॥
- ७९ दो०—बिषय बासना पुष्ट अति, होत बुढ़ापे तीर ।
७—या नागिन बट पारिकौ, केस धौरई छीर ॥
- ८० दो०—काम कोप मोहादिके, दिन २ क्यों वशहोत ।
८—देउ घटाय अहारकिन, बल पकरै जियजोत ॥
- ८१ सो०—तन मन कियोन धूर, ह्वै जातो अक सीरजो ।
९—रेरसायनीकूर, पारो भारो तो कहा ॥
- ८२ दो०—फुँकयो चपल कंचन असल, ताँबेको करिलेय ।
१०—जोचंचल चितफुक सकै, जानैका गुनदेय ॥
- ८३ सो०—गये चित्त मुरझाय, ऋद्धिसिद्धि केहि अर्थकी ।
११—मुरदा जल उतराय, पैको मानै सिद्धतिहि ॥

- ذوق غافل جو دم کی آمد و شد سے نہ ہو وی تو ۷۵
ہر دم ہے تجھ کو سیر و وجود و عدم نصیب
- ناسخ ہے عجب راہ عدم بھی جو چلا اس راہ میں ۷۶
اک قدم میں پیش قدموں کی برابر ہو گیا
- ایضاً ہے یہ وہ راہ کہ تاعرش پہنچتا ہے بشرہ ۷۷
دل میں دروازہ سے اس گنبد زنگاری کا
- وفائی سفاہنی در دل نیم شبان کو ب کہ چون روز شود ۷۸
ہمہ در با بکشائیند و در دل بندند
- ذوق زیادہ ہوتا ہے پیری میں فرہ نفس اتارہ ۷۹
یہ بالون کی سفیدی شیر ہے اس مار زہن کو
- صبا نفس امارہ سے کیوں زیر ہوا چاہتا ہے ۸۰
زور کر روح میں تقلیل خدا سے پیدا
- ذوق نہ مارا آکھو جو خاک ہو اکسیر نجاتا ۸۱
اگر اپنے کو اسے اکسیر گر مارا تو کیا کار
- ایضاً سیما ب خاک ہو وی تو مس کو طلا کرے ۸۲
اور دل جو خاک ہو وی تو کیا جانے کیا کرے
- غنی خرق عادت کے بجا آید دل افسردہ را ۸۳
گر رو در آب نتوان معتقد شد مردہ را

८४ सो०—तरवरलचिलचि जाय, दब्यो भार उपकार फल
१२—फलसों हाथ उठाय, याउपबनमें सरोवनि ॥

८५ दो०—नहीं कामना बन विषै, बाघ बीगभयदाय ।
१३—तो ही सों ह्यौं उठि लगै, तेरे संग बलाय ॥

५ (अ) मनशुद्धि ।

८६ दो०—पूँजी चित्त प्रकाश की, निबल मिताई होय ।
१—मधुज मेल गुन सूत पद, सभा दिया की लोय ॥

८७ दो०—जतन यहै मन सुच करन, उठै न अनरसभाय
२—इहि दरपन नत कीठ ह्यै, बैठि अवस यह जाय ॥

८८ दो०—जाको मन होवे अमल, बढत घटन ते सोय
३—देखौ मोती जात बन, सूखि २ कन तोय ॥

८९ सो०—कनकनमें दरशाय, भास भास करको प्रकट ।
४—जो मन मल मिटि जाय, माटीमें दरपन मिलै ॥

९० सो०—निरमल मन तिहि जान, दरपन सम जोल्येय करि ।
५—अपने विषे समान, हित अनहित सब भाँतिके ॥

९१ सो०—बिमल भक्त जन टेक, दरपन लौं मन धरैं नहिं ।
६—नीक अनीक बिबेक, तासुं करहिं जिहि पाहुनो ॥

صائب ۸۴ قد نہال خم از بارنت شمر است
شمر قبول کن سرو این گلستان باش

فیضی ۸۵ دروشت آرزو نہ بود ہم دام و دود
راہیت اینکہ ہم ز تو خیر و بلائے تو

۵ (الف) صفا و روشنی قلب

صائب ۸۶ دوستی بانا تو انان مایہ روشندی ست
موم چون بارش تہ سازو شمع محفل بیشود

ذوق ۸۷ صفا سو دکلی ہی ہے صورت کہ ولین آنے ندکو کدورت
کہ بیٹہ جائے گی بالفرضورت اس آئینہ میں یہ رنگ ہے کہ

صفا ۸۸ ہے تنزل میں ترقی صاف دکے واسطے
دیکھو بنتا ہے موقی خشک قطرہ آب کا

غنی ۸۹ میتوان دید زہر ذرہ فرغ غور شید
دل اگر صاف شود روسے زمین آئینہ است

صائب ۹۰ روشن گھر کسے ست کہ ہر خوب و زشت را
برخویشتن چو آئینہ ہموار کردہ است

ذوق ۹۱ نہ رکھی خوبی و زشتی سے غرض آئینہ وار
گھر میں جہان جسے اہل صفا نے رکھا

- १२ दो०—लोक चक्षु लों एक चख, देखत सबको मीत ।
७—भले बुरे दोउ न मिलत, विमल हृदय जनरीत ।
- १३ सो०—बुरो जुष्टि समाय, तेरी तौतूहै बुरो ।
८—नीको तोहि दिखाय, है आछो तोहू तुही ॥
- १४ सो०—जिन चित स्वयं प्रकास, दुरिन सकहि जग भेषमें
९—दीप सिखा सुचिरास, दिपति चीर फानूस मधि ॥
- १५ सो०—मन उजास कब होय, बसे देह तम गेहूके ।
१०—बाती लेय न लोय, जौलों साचे में रहै ॥
- १६ दो०—निरमल मन तिहि जानिये, तत्व बेत्ता जोय ।
११—विमल मुकुरकौ को कहे, रूप दिमानो होय ॥
- १७ सो०—निरमलता जब होय, आकुलता चाहिये अबस ।
१२—निरमल दरपन जोय, चपल लगत उपयोग तिहि ॥
- १८ दो०—मल बिन निरमलता सुछवि, फल नहिं देय कदापि
१३—मधु सपीरदरपन लगत, उपवनकलई थापि ॥
- १९ दो०—विमल मन जनन मिलनगुन, मलिन असितहियहोय
१४—लगत मोरचा लोह तन, परसत निरमल तोय ॥
- १०० दो०—देखु सरोवर मुकरमें, नजर न भीजत पायँ ॥
१५—जिन्ह पवित्र मनबसनते, मल जल मधि असजायँ

ذوق	خورشید وار دیکتے ہیں سب کو ایک آنکھ روشن فیصلے ہر ایک نیک و بد سے ہیں	۹۲
ایضاً	ہے جلا تو ہی نظر آیا اگر جگہ کو میرا تو ہی اپنا ہو تجھے معلوم گرا چھا ہوا	۹۳
"	کب لباسِ دنیوی میں چپتے ہیں روشن ضمیر جامہ فانوس میں بھی شعلہ عسکریاں ہی رہا	۹۴
غنی	دل منور کے شور و درگاہ آباد بدن شمع را روشن نمی سازند تا در قالب است	۹۵
ذوق	دل صاف ہو تو چاہیے معنی پرست ہو آئینہ خاک صاف ہو صورت پرست ہے	۹۶
ناسخ	ہے صفحہ حاصل تو مینا پی بھی ہے ایدل ضرور صاف ہو کر آئینہ محتاج ہے سیاب کا	۹۷
غالب	لطافت بے کثافت جلوہ پیدا کر نہیں سکتی چمن رنگار ہے آئینہ یاد بباری کا	۹۸
ذوق	صحبتِ صافی دلان سے ہوں مکر تیرہ دل زنگ سے آلودہ ہو جاتا ہے آہن آب میں	۹۹
ایضاً	چشمہ آئینہ میں کب تر ہو پائے نگاہ اس طرح جاتے ہیں دیکھا پاکہ اس آئین	۱۰۰

१०१ दो०—यह बिलास जल बुन्दको, जाय तोय निधि खोय
१६—दरद बढे मर्यादते, आपुहि ओषद होय ॥

५ (क) संतोष, धैर्य ।

१०२ सो०—बीर धीर सन्तोष, मन दरपन रोसन करै ।
१—हरै हीय तमद्रोष, जौकी रोटी चंद्रसो ॥

१०३ सो०—बेझर नीकी तोहि, भरे पेट गुन लगै नहिं ।
२—मेरो प्रीतम होहि, तेरे जान कुरूप जो ॥

१०४ दो०—रहे अघाने जनम भरि, लै सन्तोष सवाद ।
३—सदा बरत दीनों सदा, हरि इच्छा परसाद ॥

१०५ सो०—सुख दुख हैं सब ठौर, जो कुछहै सबहै भलो ।
४—वाहीको सुख और, है वाहीको दुःखहू ॥

१०६ दो०—जग बगियामें सुमन की, तृप्ति ईर्षा जोग ।
५—एक बसन दिन द्वैक को, जीवन डारो भोग ॥

१०७ सो०—हरि इच्छाके बाग, कदम सरों समगाढि दृढ़ ।
६—हेर फेर दे त्याग, मौसम शिशिर बसन्तकी ॥

१०८ सो०—भौंसकोरि मतयार, आपति बात प्रचंडसे ।
७—सागर क्षोभ अपार, मोतिन पानी थिर रहत ॥

- غالب ۱۰۱ عشرتِ قطرہ ہے دریا میں قاپھو جانا
درد کا حد سے گزرنا ہے دوا ہو جانا
- ۵ (ب)، قناعت و صبر۔
- غمنی ۱۰۲ روشن بقناعت شو و آئینہ باطن
ما ہے کہ دل افزو بوزبان جوینت
- سعدی ۱۰۳ اسے سیرازان جوین خوش نہ نماںد
م عشوق من است آنکہ بزد کی قناعت است
- شمیم ۱۰۴ قناعت کے فرے نے سیر کتا عمر بچو
راخوان توکل پر طرقتہ میسمانی کا
- نظیری نیشابوری ۱۰۵ ہر جا خوش و ناخوش است نیکو است
یا شادی اوست یا غم اوست
- آتش ۱۰۶ بارغ جہان میں گل کی قناعت ہے جائے رشک
عمر دو روزہ ایک قب میں تمام کی
- صائب ۱۰۷ چون سرور مقام رضا پایدار باش
آزادہ را انقلاب خزان و بہار باش
- ایضاً ۱۰۸ از شہ باد سادہ شہین بر بین مزین
در بحر بچو آب گہور قرار باش و

- १०९ दो०—समुहे विपति प्रवाहके, मुख नहिं मोरत बीर
८—सूधो पैरत सिंहहै, धारा नीर गँभीर ॥
- ११० दो०—अनावृष्टिके कालमें, मोती जल न सुखाहिं ।
९—निस्प्रेहीको सूमता, नभकी सालत नाहिं ॥
- १११ सो०—बांधी निज करबीर, भेंहदी अस सन्तोषकी ।
१०—बसि समुद्र जस धीर, मूंगा मोती छुवे नहिं ॥
- ११२ सो०—संतोषी मन नाहिं, चिन्ता औ सन्ताप मग ।
११—तृप्ति जगतके माहिं, कौन भिखारी होतहै ? ॥
- ११३ सो०—खींचीं निज २ ओर, जो २ जा मन कामना ।
१२—दोऊ हाथ सकोर, मैं दै राखे काँखमें ॥
- ११४ दो०—आज्ञापालक दास चित, नहिं जग अनहित दाग ।
१३—अग्नि भई नमरूदकी, इबराहीमहि बाग ॥
- ११५ सो०—चित्त तृषा सों जोड़, गगन कटोरामें सलिल ।
१४—गरे करे जन छोड़, और नजर काको परो ? ॥
- ११६ सो०—जाके मन सन्तोष, ताहि असन निज करन नित ।
१५—रहत अँगूठा चोष, बालक पय पाये बिना ॥
- ११७ सो०—माखी सहजहि जात, फँसि मकरीके जालमें ।
१६—त्यागीके कर तात, असन बसन लगी कल्पतरु ॥

زوق	پھرتا ہے میلِ حوادث سے کہیں مرد و ناکام نہ	۱۰۹
صائب	شہ سید پاتا تیرا ہے وقت رفتن آبِ بین دشمنک سال آبِ گہر کم نہ می شود	۱۱۰
غنی	بخل فلک باہلِ قناعت چہ می کند بدستِ خود چنان بستم خانے بے نیازی را	۱۱۱
صائب	کہ بچوں بچہ بچہ جان دراز و ریانه می گیرد دردِ بے آرزو راہِ غم و تشویش نیست	۱۱۲
غنی	در جانِ بے نیازی میکس درویش نیست ہر کس کشیدہ آرزوئے خویش در کنار	۱۱۳
صائب	ما دستِ خویش در بغلِ خود کشیدہ ایم نیست دلگیری زدنیابندہ تسلیم را	۱۱۴
ایضاً	آتشِ نمرود گلزار است ابراہیم را باتشنگلی بساز کہ در سانغِ سپر	۱۱۵
غنی	غیر از دلِ گداختہ آبے ندید کس توکلِ پیشہ را روزی بدستِ خویش می باشد	۱۱۶
صائب	کدگانگشتِ خود کو دک چون بود مشیر پستانرا لگس را بے تردد عنکبوت آرد بامِ خود	۱۱۷
	بی طولی است در تحسینِ روزی گوشہ گیران را	

- ११८ दो०—बसैं कुंज सन्तोषमें, धन्य अदृष्टहि मान ।
१७—न्यून अधिक बदरी तिनहि, दोनों होत समान ॥
- ११९ सो०—सदा वरतहू और को, दीजैं बदरी त्याग ।
१८—परचो भानुअकारको, दधि सुत छाती दाग ॥
- १२० दो०—सीप भाँति मोतीनको, तोहि बनावैं धाम ।
१९—जो बदरीदिविलोकसे, याँचै असन मुदाम ॥
- १२१ सो०—बिघन परै जब काज, खुलत जीविका द्वार तब ।
२०—आवत यह आवाज, चाकीते मम कानमें ॥
- १२२ सो०—उदय होत जब मीत, तब बूढ़ो नभ कहत हँसि ।
२१—बिधिकी गति बिपरीत, रोटी देतहि लेतरद ॥
- १२३ दो०—बैठि दिननके फेरते, बदरी मत मन मार ।
२२—धीरज करुबो देत पै, फल मीठे रुचिसार ॥
- १२४ सो०—समय पाय प्रतिकूल, बिगरे कारज धीर धरि ।
२३—दरजी कतरे तूल, बहुर सियनके कारने ॥
- १२५ सो०—बन्द एक दर होय, दश द्वारे खुल जातहै ।
२४—गुंभी बानी गोय, टीका दस २ आँगुरीं ॥
- १२६ दो०—हरैं दुःख जो औरके, हारैं निज दुखपाय ।
२५—टाँके ज्यों निज घायपै, सकैन सूज लगाथ ॥

زوق	جو کج قاعت میں ہیں تقدیر یہ شاکر ہے ذوق برابر اتھین کم او زربادہ	۱۱۸
غنی	کاسہ خود پیر کن زینمار از خوان کسے واقع از احسان خورشید است بر دل ماہ را تو	۱۱۹
صائب	چون صدف گنجینہ گوہر ترا صائب کنند رزق خود در یوزہ گراز عالم بالا کنی	۱۲۰
غنی	فتہ چون رختہ در کار تو بکشاید در روزی ز سنگ آسیاد رگو شمع این آوازی آید	۱۲۱
ایضاً	در دم صبح غنی پیر فلک می گوید کز قضا زمان دیدان لحظہ کہ دندان گیر	۱۲۲
سعدی	منشین ترش تو از گردش ایام کہ صبر گر چہ تلخت و لیکن بر شیرین دارد	۱۲۳
غنی	گر فلک کار ترا بر ہم زنداز جامرو جامہ را خلیط سازد قطع بہر دوختن	۱۲۴
غنی	وہ در شود کشتادہ چو شد بندیک درے انگشت تر جان زبان است لال را	۱۲۵
غنی	چارہ سازان ہم غنی از در خود بیچارہ اند کے تو اند بخینہ روز سوزن بہ زخم خوشین	۱۲۶

१२७ दो०—आगे काहू धनीके, हाथ सीसपै जाय ।
२६—या ते तो वा हाथपै, चूना लेय बुझाय ॥

१२८ सो०—खानन चाहे मार, जो संसारी नरनकी ।
२७—घर घर मतझक मार, मुहरालों सतरंजके ॥

१२९ दो०—दीरघ साधन सों मिलै, सो अमोल फल जानि ।
२८—हरि याचत सीते फिरै, कर तोडर बत मानि ॥

५ (ख) तृष्णा, लोभ, अधैर्य ।

१३० दो०—सबके कंस कपारके, औंधिधरे करतार ।
१—ताहूपै नर नरनते, मांगत हाथ पसार ॥

१३१ दो०—उदर काज उद्योग नर, करि अहमान कमाय ।
२—चाकी मुखदै आँगुरी, पीसिलाजसों जाय ॥

१३२ दो०—तिसना दुनिया दारकी, दुनिया पायन जाय ।
३ मुख भरि आवै नीरतिहि, तिसना बुझत अघाय ।

१३३ दो०—सोने रूपेके निकर, तृष्णा कुटन होय ।
४—उरष प्रकृति सों क्रूरगति, सम्पति सकहिन खोय ।

१३४ सो०—तिसनाभये प्रधान, मुनि पुनि कुटी न टिकसकी ।
५—जैसे तिस अकुलान, जीहनिकसि मुखसों परत ।

سعدا	بدست آنگ تفتہ کردن خمیر	۱۲۷
غنی	باز دست بر سینہ پیش امیر سیلے نخوری تا ز کف اہل زمانہ	۱۲۸
حصائر	چون مہرہ شطرنج مرو خانہ بجانہ از گران قدریست ہر مطلب کہ دیر آید بدست از تہی برگشتن دست دعا نگین مباحث	۱۲۹
	۵ (ج) حرص و طمع و بے صبری	
ناسخ	سب کے خالق نے بنائے کاسۂ سر و آرزگون	۱۳۰
غنی	آدمی اسپر بھی پیش آدمی سائل ہوا جستجو از ہر روزی باعث شرمندگی ست زین خجالت آسیا انگشت طرد در دہان	۱۳۱
ایضاً	کے تو اندش ز دنیا چشم دنیا دار میر تشنگی ز ایل نگر دہر گز از آب دہن	۱۳۲
حصائر	حرص راجع ز روسیم نسا زو خر سنو گنج بیرون نبر و کج روی از طینت مار	۱۳۳
غنی	حرص چون غالب شو دخلوت نشینی شکل است تشنہ چون گرو دزبان از کام می آید برون	۱۳۴

- १३५ दो०—भाजि छुटै धोके धडि, बँधुवा कैद फिरंग ।
६—आस छूटिवेकी नहीं, ग्रस्यो लोभजिहि तंग ॥
- १३६ सो०—'बस' कहिते न अघाय, यह जन पूरे रामके ।
७—देते राम सिहाय, सब प्रभुता लोभीन जो ॥
- १३७ दो०—लोभ पोखरा कोपियो, एक बूँद भरतोय ।
८—सोहू अन्त निकरि गयो, लाज पसीना होय ॥
- १३८ सो०—मत मन आनि अजान, लालच तिसना वासना ।
९—आसय नसत निदान, पोथीमें कीरा लगे ॥
- १३९ दो०—चित्त उदर चिन्ता फँस्यो, खोय हरष साभान ।
१०—ऊजर बाग अभागजुत, खेती करत किसान ॥
- १४० दो०—सोनो रूपो देखिके, क्यों न मुदित नर होय ।
११—होत धुवाँ टक सारको, नीको अंजन लोय ॥

५ (ग) प्रसन्नता, दारिद्र्य ।

- १४१ सो०—है रहिबो आसान, सावधान मद पान करि ।
१—मरद ताहि पै जान, धनहि पाय इतराय नहि ॥
- १४२ दो०—वसी करन उचाटके, पूँछत काहे तंत्र ।
२—जान रूपैयानकसको, सिद्ध जाग तो जंत्र ॥

صائے ۱۳۵
 میبتوان جستن بہ مگر وحیدہ از قید فرنگ
 تیسست امید رہائی با گرفتار طمع

زوق ۱۳۶
 منہ سے بس کہتے نہ ہرگز یہ خدا کے بندے
 گرجر لیون کو خدا ساری حلالی دیتا

غنی ۱۳۷
 از جوئے حرص میں خوردم ز قطرہ
 آن نیز عاقبت عرق انفعال شد

آتش ۱۳۸
 حرص و ہوا کو سینہ میں غافل جگہ نہ دے
 مطالب کو قوت کرتا ہے کیڑا کتاب کا

غالب ۱۳۹
 دل اسباب طرب کم کر دو در بندہ تم نمان شد
 زراعت گاہ دہقان میشود چون باغ ویران شد

نار ۱۴۰
 سیم وزر کے دیکھنے سے خوش نہ کیوں انسان ہوں
 طوطیا کے چشم ہوتا ہے دہوان تکمال کا

۵۵ دو، تو نگرہی و افلاس

۱۴۱
 بادہ نوشیدن و ہشیار شستن سہل است
 گرد دولت برسی مست نگر دی مردی

زوا ۱۴۲
 کیا پوچھتا ہے تو کل بغض و محبت
 چلتا ہوا تعویذ سچہ نقش درم کو

- १४३ दो०—एक दियासे चासिबो, कयुक सहजही बात ।
३—सम्पति पायन भूलिये, सुजन सनेहिन तात ॥
- १४४ सो०—सहज तुष्टिको जान, तात रसायन आतमिक
४—यदपि नाहिं धनवान, मनही मन भरपूर रहु ॥
- १४५ सो०—जगके धनिक अजान, काजानें या कोसको ।
५—औरहि सम्पति जान, मनोकामना त्याग सुख ॥
- १४६ सो०—बढे अभाव अपार, तुरत धरत धृति आयकर ।
६—देह वर्तुलाकार, चाहन राखहि लकुटकी ॥
- १४७ दो०—बुद बुद लों निज सदन सों, मदन पदारथकादि ।
७—जो तेरे घरना धसे, फिर बलाय जल बादि ॥
- १४८ सो०—खाली हाथनतात, मलीसामरथ हस्तगत ।
८—चाकी बैठी खात, आय जिभावत पाहुने ॥
- १४९ दो०—मन मौजिनके हाथमें, मालकहाँ ठहराय ।
९—प्रेमी मन धीरज नहीं, जलचलनी नटिकाय ॥
- १५० सो०—साँपहि मिलत अझार, देखो और न धूरित ।
१०—खाक सीस पैठारि, ऐसी दौलत मिलनके ॥
- १५१ सो०—खीसा रहत हमार, बुद बुद समरी तो सदा ।
११—मुहरैं तनपै भार, होयै न मीन कमीन लों ॥

صائے	از چرائے میتوان افر وخت چندین شمع را دو لختی چون رود بد از دوستان غافل بشو	۱۴۳
ایضاً	غناء طبع بود کیمیا کے روحانی چونیت مال میسر بدل تو نگر باش	۱۴۴
عالی	شعراں بنجیر کو کیا خبر اس گنج کی دولت آسائیش ترک تمنا اور ہو	۱۴۵
غنی	حاجت از حد چور و دست دہا ستغنا قد خرم حلقہ چو شد کا ندارد بعضا	۱۴۶
ایضاً	خانہ خالی کن ز اسباب تعلق چون حباب تانیہ بدر راہ در کاشانہ ات سبیل بلا	۱۴۷
ایضاً	مرا چون آسیا خوش دستگاہی در تہی دست کہ روزی آورد در خانہ من حمان از خود	۱۴۸
سعدی	تہر در کف از اوگان نگہیہ و مال نہ صبر در دل عاشق نہ آب و غیر مال	۱۴۹
غنی	روز رنجی مانیت غیر از خاک خاک بر فرق مالدار یسا	۱۵۰
ایضاً	پیوستہ کیستہ ماہی چون حباب خالی است مرا در مہ چو ماہی جزو بدن نگرود	۱۵۱

- १५२ दो०—भुंजी मछरिया कहत है, देखकर मलिखधार ।
१२—दाग देत है उनहि जिन्हि, मुहरें देत अपार ॥
- १५३ दो०—जानो अधिक फकीरपै, अमीर सों जौभार ।
१३—इक कामरिके बोझपै, चढत हुआला चार ॥
- १५४ सो०—तो को करत अमीर, जो कोऊ नहिं बावरे ।
१४—वाको तेरी पीर, है तोसों निश्चय अधिक ॥
- १५५ सो०—नरके दोस न जात, बदरी भवनिधि पाय निधि ।
१५—कंचन नहिं सकात, मेदि कसोटी कालिभा ॥
- १५६ दो०—चले जात गुल कहत तब, सुमनलता के पात ।
१६—तिन छोरेँ जरदार किन, जिनके खाली हात ॥
- १५७ दो०—निरधन बसे धनीन सँग, लहत सोच संकोच ।
१७—डोरामुक्ता हलनि मधि, होत दूबरो पोच ॥
- १५८ सो०—सफल एक नहिं होय, करै लाख उद्योग जो ।
१८—बिन जरको नर जोय, सो बिन परके सर सरिसा ।
- १५९ दो०—मिलत चुगा बहिरारसे, परे पींजरा कीर ।
१९—अम्बर तर आधीन द्विज, क्यों नाहक दिलगीर ॥

- ۱۵۲ کتھی ہے ماہی بریان کہ دبیران قضا
 داغ دیتے ہیں آس جہ کو دم دستہ ہیں
 ذوق
- ۱۵۳ بار دنیا ہے امیرون سے فقیروں پر زیاد
 بوجھ کم ہوتا ہے کیل سے نہایت شال کا
 ناس
- ۱۵۴ آہ نکس کہ تو نگر تہی گرداند
 او مصیحت تو از تو بہتر و اند
 سعہ
- ۱۵۵ غنی از دولت دنیا نگر عجیب کس زایل
 کہ زرتواند از روئے جھک بیرون سیاہی
 غنی
- ۱۵۶ گل چلے جاتے ہیں تو کہتے ہیں برگ گنبن
 ہم تہی رستوں سے کیونکر نون زردار جا
 ناس
- ۱۵۷ نفیست نفلس را از قرب اغنیا خریج و تاب
 رشتہ از گوہر ندارد بہرہ جز لا عنشدن
 صائہ
- ۱۵۸ سعی نفلس کے بجائے میرسد
 آدمی بے برگ تیرے پرست
 غنی
- ۱۵۹ در نفس روزی زیرون بخورد مرغ نفس
 غم ز بے برگ چراد ز زیر گوہر و نینجوری
 صاب

५ (घ) उदारता, कृपणता ।

- १६० दो०—यज्ञ तत्वके भेदको, जानो चाहे जोय ।
१—बनै हलाहल आपको, और हि सकर होय ॥
- १६१ दो०—लेत डारि फल दारको, फलके हेतु लचाय ।
२—दान देत में अधिकतर, दानी झुकि २ जाय ॥
- १६२ दो०—दूरस्थनि हित सुधि करन, साँचो साहस दान ।
३—यो तो डारैं द्रुम सबै, फल दल निज पगथान ॥
- १६३ सो०—मेवा मीठी लाय, जो जगहित नहिं करि सकहि
४—सेवाछाय विछाय, सरो बेतलों अवसकरि ॥
- १६४ दो०—छोरि २ भाजत बसन, हम सूचीकी चाल ।
५—जग लामे बागे सिये, आपु उधारे हाल ॥
- १६५ दो०—परदा ढांकन जगतसे, नीको कौन निचोल ।
६—औरन औगुन ढाँकि दग, आपु उधारे डोल ॥
- १६६ सो०—जिनके मन दरयाव, रावरंक तिन दगन सम ।
७—ऊंचनीच थलभाव, दुरोरहत जलके तरे ॥
- १६७ दो०—सूर बीर सुइदीन जन, शरनलहैं जिहि पाहिं ।
८—काम चामको खरगते, अधिक वीरतामाहिं ॥

११६, सखात و نخل

فیضی	خواہی بہ معنی ایشا درسی	۱۶۰
ذوق	با خود ہلا ملی کن و با غیر شکر می لیتے ہیں شمشاد شمر و کو جب کا کر چھلکتے ہیں سخی وقت کرم اور زیادہ	۱۶۱
صائب	دور دستا نزا با حسان یا در کن بہت است ورنہ ہر تھلے پیائے خود شرمی انگسہ	۱۶۲
ایضاً	بمیوہ کام جہان گرنی کنی شیرین چوسہ و وید بہر حال ہمایہ کتر باش	۱۶۳
غنی	ہچو سوزن دایم از پوشش گریز انیم ما جامہ بہر خلق می دوزیم و عریانیم ما	۱۶۴
صائب	کہ ام جامہ بہ از پردہ پوشی خلق است پوش چشم خود از عیب خلق عریان باش	۱۶۵
ایضاً	شاہ و گدا بدیدہ در یادلان کیسیت پوشیدہ است بت و بلند زین در آب	۱۶۶
فرخ	جو پوشیت و پناہ زیرستان وہ بہادر ہے جو انگری میں افزون تیغ سے کار سپر یا	۱۶۷

- १६८ दो०—कहा भयो जो जगतकी, सम्पति घरी समेट ।
९—उठत नफातासों नहीं, बिनादान करभेट ॥
- १६९ दो०—लोगनके तू दृगन सों, अपनी देन दुराउ ।
१०—हात भसम निजदानके, किस्सा मत कहि बाउ ॥
- १७० सो०—जिनहिं बिधाता बाम, दाता तिनहिं नदेहिं कछु ।
११—देख भँवरको जाम, भरी नदी नहिं भरिसकहिं ॥
- १७१ दो०—दाता तुल्य उदार नहिं, लखदर याउ गँभीर ।
१२—इनकब दियोहुबाबको, तनक जामभरनीर ॥
- १७२ सो०—कहाबैरियादाय, दानिनसों नभ कहतहै ।
१३—हाँलों देउँ झुकाय, तोडूँ डारिजु देय फल ॥
- १७३ दो०—ऐसो बैरी होत जग, बीर पुरुषको बीर ।
१४—मारे हूपै बाघको, मुँहभुरसत बेपीर ॥
- १७४ दो०—ओछे लोगनको कहा, फल उदारता देय ।
१५—गेह प्रकासत दीप निज, मुँहकारो करिलेय ॥
- १७५ दो०—मनमौनी हू जातहै, हित उपकारी दास ।
१६—कत गुलाम किरपन बनत, कबक रजत जगआस ॥
- १७६ दो०—पाथरसे नहिं बाँटके, झुक्यो चहे तू जोय ।
१७—न्यून अधिकके फेरमें, मतन तराजू होय ॥

- १७७ दो०-जोरि २ संचय कियो, दियो न बिलसो आप ।
१८-ज्ञानवानकी जानमें, यह कुकर्म औ पाप ॥
- १७८ दो०-गगनरूपनतापै कमर, ऐसी कसी बनाय ।
१९-ओस बिहीन मसौस कर, निरझर तपनित पाय ।
- १७९ दो०-किरपन धन बसनीकसत, ज्यों द्विज अंडअछेद ।
२०-लगत पंख व्ययचाउ धन, जानत ना यहभेद ॥
- १८० दो०-धन समेटि सूमहि मिलत, केवल चिन्त अहार ।
२१-एक डंक तजि रहत कह, मधुमाखी सँगयार ॥
- १८१ सो०-लीने मेरे प्राण, सूमनकी गुन कूतने ।
२२-उनके द्रव्य समान, अनरस माटीमें गड़बो ॥

५ (च) वैराग्य ।

- १८२ दो०-बनै अजानो जगतसों, अच्युत परचित सोय ।
१-या सागरते कढ़तही, नर मुक्काहल होय ॥
- १८३ सो०-आनखसिख सो पूत, जिन घोपे कर जगतसों
२-उनहि मिटावनछूत, मल २ न्हान जरूर नहिं ॥
- १८४ सो०-मन बिरवापे वन्द, मतकरि विटप जहानसों
३-पौद लगाई मन्द, यह औरहि थल कारने ॥

سو بی بائید پیشی نہ داد و نخورد
خردمند اندک ناخوب کرد ۱۷۷

تاغ آسمان نے نخل پر اس درجہ باندھی ہے کہ
چشمہ خورشید بھی محتاج شبنم ہو گیا ۱۷۸

غنی نیار و مسک از ہیمان چو مرغ بیضہ ز سیردن
ازین غافل کہ آرد ز رشوق خجج پر سیردن ۱۷۹

صاب روزی مسک ز جمع مال تشویش است و بس
انچہ میانہ ز بنو عسل جس نہ نش نیست ۱۸۰

ناسخ مارڈالا مسکون کی قدر دانی نے مجھے
شل ز رخاک کہ ورت مین مین مدفون گیا ۱۸۱

۵ دو، ترک دنیا

صائب آشنائے حق رشدا نکس کہ جہان بیگانہ شد
ہر کہ زمین دریا برآمد گوہر یک دانہ شد ۱۸۲

ذوق سر ایپاک ہیں دہوئے جنھون نے ہاتھ دنیا سے
نہیں حاجت کہ وہ پانی ڈھلائیں سر سے پاؤں تک ۱۸۳

صائم دل در جہان بند کہ این نو نمال را
از بھر سر زمین دگر سبز کوہ لندہ ۱۸۴

- १८५ सो०—दिव्यलोक थल देख, या बिरवा फल दारको ।
४—मतकरि पुष्ट विशेष, नातो मांगी भूमि सों ॥
- १८६ सो०—महि पर डारि बहार, आगेही पत झारसों ।
५—छोडत अपनोकार, मरद दूसरेपै नहीं ॥
- १८७ सो०—जग अनुराग निवार, मैयाको निज दूध जो ।
६—तेरो दिव्य अहार, सोहू धौरे रँग रुधिर ॥
- १८८ सो०—विषय वारितजि हंस, जो सूखै दुख मूलही ।
७—पावत फिर मधु अंस, पहिले दंश महुक सहि ॥
- १८९ दो०—त्याग विसन अहिफेनको, भलो घटाउ इलाज ।
८—क्रम २ करिके मोचिये, जग सम्बन्ध समाज ॥
- १९० सो०—अपने सदन मझार, होत भिखारिहु भूपहै ।
९—पग निज सीमापार, धरि जिन रहू अबनीसबनि ॥
- १९१ दो०—असकत वा सन्तोष बस, तज्यो नाहिं उद्योग ।
१०—पुरुषार्थ आरत भयो, साहस लाग्यो रोग ॥
- १९२ दो०—रनमें जो तनमें लगै, भलेसुधाव अनेक ।
११—नीको लमैन खालपै, दाग ढालको एक ॥
- १९३ दो०—रहे वसन सब शकनके, कांठनमें अरुझाय ।
१२—बन अभावते हौं न गिन, आगे पहुँचो जाय ।

ہ سب	عالم بالامست جائے این نہال بارور	۱۸۵
لا مائاً	رشتہ خود در زمین عاریت محکم مکن پیش از خزان بہ خاک فٹ اندم بہا خویش مردان بہ دیگران نگذارند کار خویش مہراز جہان بہ بہر کہ غذائے لطیف تو	۱۸۶
تازخ	خون ست در لباس اگر کشیدہ ماہرت ترک لذت کرد لاہو بچے نہ تا جھگو زند نوش تو پیچھے ہے پھل نیش ہر زنبور کا ترک افیون را علایج بہتر از تقلیل نیست	۱۸۸
صاب	اندرک ندرک آشنا با این جہان بیگانہ شو درون خانہ خود ہر گداشنہ شاہست	۱۸۹
الغیا	قدم برون منہ از خویش و سلطان باش ضعف سے ہے نے قناعت سے یہ ترک جستجو	۱۹۰
غالبا	میں وبالِ تکیہ گاہ ہمت مردانہ صم وہ معرکہ صند زخم رسد گر بہ تن ما	۱۹۱
غشو	زلزلہ کہ لو دوان سپر بر بدن ما اور مردوں کے کفن کا نٹون میں اٹھنے رکھے	۱۹۲
تاز	اگے صحرائے عوم کے بھی یہ عریان بڑھ گیا	۱۹۳

५ (छ) जावन, मरण, यश, रचना ।

- १९४ दो०-खोय खोज निज मरनते, प्रथम अमर होतात ।
१-राखे किनके खोजनत, मौत जगतविख्यात ॥
- १९५ सो०-प्रिय जीवन संसार, कुट्टि २ गारन जोग नहिं ।
२-मत जराउ यहतार, एतोदीरघहै कहाँ ? ॥
- १९६ सो०-उमर घटावत तात, अमर होनकी घातमें ।
३-वे मूरख प्रख्यात, चोरत काल जु आपनो ॥
- १९७ सो०-रे दीपक नादान, परम बैस तुव एक निस ।
४-रोय २ दे प्रान, चाहे हँसि २ काटिले ॥
- १९८ दो०-चलति आयुको दियो तुहि,या लगि चपलतुरंग ।
५-बेग एड करि पारहो, भवनद लहर उतंग ॥
- १९९ सो०-असमन उठत तरंग, लखि २ सरित प्रवाहको ।
६-वही जात एहिरंग, मम ब्यतरनी अहर निस ॥
- २०० दो०-जीतवको परमानका, भवसागरमें भीत ।
७-जल प्रवाहमें कोकरै, बुद बुदकी परतीत ॥
- २०१ सो०-अहो भाउ परभाउ, बैर कहाँलों बँधि गयो ।
८-एकहि जल दरयाउ, बुदबुद और तरंगलों ॥

۵ (زر) زندگی و عمر ناموری تعمیر

- بے نشان پہلے فنا سے ہو جو ہو چھکو و تھا
 ۱۹۴ ورنہ ہے کس کا نشان ذوق فنا نے رکھا
- عمر عزیز قابل سوز و گداز نیست
 ۱۹۵ این رشتہ را سوز کز چندین دراز نیست
- عمر خود را کم بامید فرونی میکنند
 ۱۹۶ سادہ لوحانے کئی ذرہ سال خوشین
- اسے شمع تیری عمر طبعی ہے ایک رات
 ۱۹۷ رو کر گزار یا اسے ہنسر گزار دے پڑ
- عمر روان کا تو سن جلاک اس لیے
 ۱۹۸ تجھ کو دیا کہ جلد کرے یا نسے ایڑ تو
- دیکھو دریا کو میرے چین یہ لہرائے ہے
 ۱۹۹ کشتی عمر میری یوں نہیں بھی جائے ہے
- بجز فنا میں زلیت کا کیا اعتبار ہے
 ۲۰۰ آب روان پہ کیا ہے بہر وہ جباب کا
- ہوئی ہے کیا ہی تعین سے دشمنی باہم
 ۲۰۱ نہیں اگر چہ جباب اور موج آب جدا

- २०२ सो०—पूँछि करेजेतासु, करुवाई जग जियनकी ।
९—फरतबुराई जासु, एकोएक विनोद नित ॥
- २०३ दो०—जग करुबो पयपानसे, लै पयदान तलक ।
१०—जनमघुटीमें घोट दुख, नरको देत फलक ॥
- २०४ सो०—जीवनराखत रुवार, लोक दृगनमें पुरुषको ।
११—दूटतस्वींसा तार, लोग उठावत कंधपै ॥
- २०५ दो०—देहीके जग गेहमें, गहै देहयों पाय ।
१२—ज्यों माटीके मेलते, सलिल रेलथम जाय ॥
- २०६ सो०—जौलों तनमें साँस, जीव जाय सुरलोक नहिं ।
१३—पाउँ दामकी फाँस, सो पक्षी क्यों उडिसकै ॥
- २०७ दो०—तन मन्दिररचि समय धन, वृथा गमावत लोग ।
१४—यह बन्दीगृह छुटनको, करत नाहिं उद्योग ॥
- २०८ सो०—बदरी मत बिसराउ, निजकारजपरि नामतू ।
१५—मौत तींद चितलाउ, जगत कहानी कानदै ॥
- २०९ दो०—अपने सत्ता भवनकी, आँगन विकट अभाव ।
१६—करलीजै व्यायाम नित, पै न होय छिटकाव ॥
- २१० दो०—आये लाये करमके, बँधे धरमके जात ।
१७—अपने मन आये नहीं, चलेन आप बसात ॥

مختہ	تلخی زیت اسکے کلیجے سے پونچھے	۲۰۲
نارسا	جسکی ہر اک خوشی کا نتیجہ بلال ہے	۲۰۳
ایضاً	شیر سے تا شربت مرگ ایک ہی تلخی جو مان	۲۰۴
غمر	غم لگا کھانے وہیں انسان جہاں پیدا ہوا	۲۰۴
ایضاً	زندگی چشم جہاں میں خوار کھتی ہے ولا	۲۰۴
غمر	دوشس پر سب نے لیا جب آدمی بیدم ہوا	۲۰۵
ایضاً	تن ساختہ پابند درین مرحلہ جان را	۲۰۵
صائب	ساکن کنڈا فیرش خاک آب روان را	۲۰۶
غنی	ندارد رہ بگردون روح تا باشد نفس در تن	۲۰۶
ذوق	رسانی نیت در پرواز مرغ شستہ بر پارا	۲۰۶
ایضاً	میشود اوقات مردم صرف در تعمیر تن	۲۰۶
	فکر از اوی ازین زندان ندارد بیچکس	۲۰۸
	غافل مشوز عاقبت کار خود غنی	۲۰۸
	دل نہ بخواب مرگ کو دنیا نسا نہ است	۲۰۹
	خانہ ہستی کا اپنے صحن ہے دشت عدم	۲۰۹
	روز کر لیجے چیل قدمی مگر خدمت نہیں	۲۱۰
	لائی حیات آئی قضا لیجلی چلے۔	۲۱۰
	اپنی خوشی نہ آئے نہ اپنی خوشی چلو	

- २११ दो०—बदरी जब आये यहाँ, लाये कहधों संग ।
१८—हाँते तो लै जाउगे, जिय भारि लाख उमंग ॥
- २१२ दो०—लाखन भूपतिहै मिटे, आली आली जाइ ।
१९—निस सराय जग सोयके, गही भोर उठिराइ ॥
- २१३ दो०—आये चढ़े समीरपै, जैसे सुमनसुवास ।
२०—माटीमें यों मिलिगये, ज्यों जल पावसमान ॥
- २१४ दो०—गये द्वैक दिन फूलतो, जोवन सुखद दिखाय ।
२१—कलक होतउनकलिनको, रहैंनिपटकुम्हिलाय ॥
- २१५ दो०—जग अनित्यधों नित्यहै, मैं क्यों कहँ निदान ।
२२—मोबलायसे होय कछु, जम ले जैहै प्रान ॥
- २१६ सो०—कियो मौतलाचार, नातर यह नरवर अटल ।
२३—अहंकार चितधार, गिनतो नहिं नारायनहु ॥
- २१७ सो०—मैयाके उर होय, सम आदर सब सुतनको ।
२४—भूमि अंकमें सोय, राउ रंक कर एकपद ॥
- २१८ दो०—को आयो संसारमें, रह्यो सदा जो होय ।
२५—पैवाको जानो रहत, सुयस कमायो जोय ॥
- २१९ दो०—मरोताहिनहिं जानिये, जाने दिये रचाय ।
२६—पुल मन्दिरबाषी कुवाँ, बागतडाग सराय ॥

- ۲۱۱ وان سے یان آئے تھو اسے ذوق تو کیا لاو تھر
 یان سے تو جائین گے ہم لاکھ تھمتا لیکر
 (ذوا)
- ۲۱۲ بٹے لاکھوں شخصنا بان عالیجاہ ہو ہو کر
 سرائے دہر میں شب آئے تھر کے چلے سو کر
 (احمد)
- ۲۱۳ چون بوئے گل آمدند بر باد سوار
 بر خاک چو قطرہ ہائے باران رفتند
 پھول تو درودن بہار جانفز او کھلا گئے
- ۲۱۴ حسرت اُن غنچون یہ ہو جوین گلوم جھاگو
 کیا جانین ہم زمانہ کو حادث ہے یا قدیم
 (ذوق)
- ۲۱۵ کچھ ہو بلا سے اپنی کہ ہن فانیون میں ہم
 موت نے کر دیا ناچار و گرنہ انسان
 (ایضاً)
- ۲۱۶ یہ وہ نچو دین تھانہ کا بھی قائل ہوتا
 جا برا ہے دل ماورین ہر فرزند کی
 (ناسخ)
- ۲۱۷ رتبہ زیر خاک یکسان چو گدا و شاہ کا
 نیاید کسے در جہان کو بہاند
- ۲۱۸ مگر آن کز و نام نیکو بہاند
 (سعدی)
- ۲۱۹ ثنوا نکہ ماند پس از و سے بچاے
 بل و سجد و چاہ و ممانسراے
 (ایضاً)

- २२० दो०—जस चाहत तो अवसही, सकल लोकहितलाग ।
२७—पुल बनाउ मन्दिर विपुल, वापी बाग तड़ाग ॥
- २२१ दो०—मन्दिर रचिबो छोरिकै, मन बनाउरे कूर ।
२८—अनरस रजतजि कहा फल, खेलत धूसरधूर ॥
- २२२ सो०—मनमन्दिर रचि साज, जो उठाय सँग जायलै ।
२९—यों विनाशके काज, दरउठाउकै भीत चुनि ॥
- २२३ सो०—रचिपचि साजो धाम, अवनीपै तो कहाफल ।
२४—होते पूरन काम, काहू चित हित घर बसे ॥

६ आदरसत्कार ।

- २२४ दो०—शुश्रूषा संसारकी, निश्चय बाधक जान ।
१—नबत जाहि देखो यहां, पायो तेग समान ॥
- २२५ सो०—प्राणन लेहु बचाय, कोमल बनिके निदुरते ।
२—भयविधिवेको नाय, मोती लों जल बुन्दको ॥
- २२६ सो०—ज्यों बुदबल की गोठ, घर अपनो खाली करें ।
३—जा बैरी सों चोट, होय तहाँ सो पाहुनो ॥
- २२७ सो०—झुकि २ सीसा लेत, हँसि २ चसकलगायगर ।
४—यह मद पान निकेत, है नाहीं थल ठसकको ॥

ذوق	نام منظور ہے توفیق کے اسباب بنا پل بنا چاہتا ہے سجد و تالاب بنا	۲۲۰
صائب	بخود ساز سے بدل کن اوسیدہ دل خانہ سازی ہوا کہ بزرگد و رت نیت حاصل خاکبازی ہوا	۲۲۱
ناسخ	چاہیے تعمیرِ دل جو ساتھ اٹھا لیجا گیا یوں خرابی کے لئے دیوار اٹھایا در اٹھا	۲۲۲
سحر	یہاں مکان بنایا تو کیا کیا سمیٹے مرا تھا جب کہ کسی دلیں اپنا گھر ہوتا	۲۲۳
۶ (الف) تواضع۔		
قبول	تواضع اہل دنیا کی یقینی قاتلِ جان ہے مثال تیغ دیکھا ہے اسکو جب کو خم پایا	۲۲۴
غنی	ماہِ نیری جانِ زودستِ نخت گیرانِ حمی بریم بیمِ سقن نیت چون در قطر ہائے آبِ را	۲۲۵
ایضاً	جائے خود چون مہرہ شطرنجِ خالی میکیم دشمن ما پیشود در خانہ ما ہمان	۲۲۶
ناسخ	جھک گئی کے شیشے ملتے ہیں ہنس ہنس کے جام سے یہ میکرہ مقام نہیں ہے غرور کا	۲۲۷

- २२८ दो०—नरन नवाबत जगतमें, गुन कुलीनतासील ।
 ५—कसत वहे तरवार है, जाको पिंड असील ॥
- २२९ दो०—आदरशील सुहोत नर, जिहि उपकार उदार
 ६—लसत डारि फलदारमें, फलसों फूल अगार ॥
- २३० दो०—दीनसों नबिकै मिलत, जिनको विभवउदार
 ७—देसौ भूमि प्रनामको, झुकिरह्यो गगन अपार ॥

६ (अ) अभिमान, दैन्य ।

- २३१ सो—जगविलासके धाम, लसै प्रकाश सुहावनो ।
 १—जब कंदील ललाम, लटकै गर्वी सीसकी ॥
- २३२ सो०—कहत सुराही बैन, निहुरि कानमें जामके ।
 २—लचत नारि तिन ऐन, सीस उठावत जो यहाँ ॥
- २३३ सो०—तितर बितर भयो फूल, हाँसीके फल बागमें
 ३—अरीकली जिन भूल, हाँ उपहास भलो नहीं ॥
- २३४ सो०—अन्त जाय हलकाय, ज्ञानवानकी दृष्टि में ।
 ४—पानीपै उतराय, जो बुदबुद की भाँति नित ॥
- २३५ दो०—अभिमानी पाइनपरे, ह्वै जिन बैठि निचीत ।
 ५—अगि न परै चाहै जहाँ, निज गुण तजै नमीत ॥

	خمیدہ کرتا ہے انسان کو جو ہر شرافت کا	
	اصالت حسین ہوتی ہے وہی تلو گستی ہو	۲۲۸
ذوق	وہ خلق سے پیش آتے ہیں جو فیضِ سانہین	۲۲۹
	ہے شلخِ شردارین گل پہلے شمر سے	
ناسخ	خاکساروں سے ملا کرتے ہیں جھک کر سر بلند	۲۳۰
	آسمان پیش زمین بہر تو اضعِ خشم ہوا	

(۶) الف سکرشی و فروتی

ذوق	جہان ہے خانہ عشرت جیسی ہوا سکا فروغ	۲۳۱
	کہ لنگے اسین سر پر غم و رکی تبدیل	
غنی	گوید زبان شیشہ نہانی بگوش جام	۲۳۲
	ہر کس کہ سر کشد بجان سرنگون شود	
ذوق	گل پریشان ہوا ہنس کر کے چمن میں آخر	۲۳۳
	دیکھ اے غنچہ بہان خندہ زنی خوبین	
غنی	در چشم اہل بنیش آخر سبک درائی	۲۳۴
	گر چون حساب تو اہی بر روی آفتاب	
ایضاً	چو سرکش بر سر افتادگی آید مشوا مین	۲۳۵
	کہ کا خوشیش خواہد کرد آتش ہر کجا افتد	

- २३६ दो०—कोमलता अरु नेहते, अभिमानी वरा होय ।
६—तेल तूलेके मेल फँसि, बँधति दिया की लोय ॥
- २३७ सो०—जबर न लहै करार, जेर रहै धीरज धरे ।
७—याके साखीदार, चाकीके दोउ पाट हैं ॥
- २३८ दो०—बदरी कुत्सित दृष्टिसे, यहां देखिये काहि ।
८—सबही हमसों अधिकहैं, थोरो कौन दिखाहि ॥
- २३९ सो०—चढत हमारो रंगु, आखिरखिलि जग अखिलै
९—परे पुहुमिपै पंगु, जोहू भेहदीपात सम ॥
- २४० सो०—लेहु पतन व्रत धारि, अधम धूर ग्रह छोर यह ।
१०—इनहीं परन पसारि, ओस जात उड़ि सूरपै ॥
- २४१ सो०—पहुँच तरनिलों जाय, ओस गिरपर निकारने ।
११—देखो तो चितलाय, कहँ सों कहँलों गम्यहै ॥
- २४२ दो०—नाउँ होय ऊँचो बहुत, आपुन नीचे होत ।
१२—तारा सब कोऊ कहत, जलपतालके सोत ॥
- २४३ दो०—याटी सो जो बनिरहे, ऊँचे पद पै जाय ।
१३—नदी नीर नीची सदा, ऊँचो तीर दिखाय ॥

- غنی ۲۳۴ توان از چرب و نرمی کرد اسیر خویش سرکش را
 که تار شمع دایم شعله را ز بنجیر پا باشتد و
- ایضاً ۲۳۶ زیر دست اضطراب زبردست آسودگی دارد
 دوشا هد بر کلام من دو سنگ آسیا باشد
- ذوق ۲۳۸ اے ذوق کسکو چشم حقارت سے دیکھیے
 سب ہم سے ہیں زیادہ کوئی ہم سے کم نہیں
 آب و رنگ ما بعالم عاقبت گل میکند
- غنی ۲۳۹ بر زمین ہر چند چون برگ خا افتادہ ایم
 افتادگی کریں کہ ازین خاکدان پست
- صائب ۲۴۰ شبنم آفتاب بہین بال و پر رسد
 شبنم آفتاب رسید از قنادگی
- ایضاً ۲۴۱ بگر کہ از کجا کجا میتوان شدن
 نام یون سبجی من بالاتر ہا سو گیا
- ذوق ۲۴۲ ج طرح باقی نمونین کی تہ تہا گیا
 دیکھا تو خاکسار کا تہ بہ بلند ہے
- اعظم ۲۴۳ دریا ہے پست ساحل دریا بلند ہے

७ सांसारिकगति ।

- २४४ सो०-जैसी होय चितौन, अचरज तस संसारमें ।
१-अधिक दिखै या जौन, चकित चितताकों अधिक ।
- २४५ दो०-कहुँ कलिका कहुँ सुमनहै, कहुँ कुम्हिलाये फूल ।
२-हमहिं कुतूहल नितनयो, जग फुलवारि अमूल ॥
- २४६ दो०-उपवन लसत सुहावने, रंग विरंगे फूल ।
३-लौट फेर है जगत में, बदरी शोभा मूल ॥
- २४७ दो०-साँझ सकारे नितनई, जगमें स्थिति होय ।
४-निस भर बसति सराय जो, बासर ऊजर सोय ॥
- २४८ दो०-मतवारो इक एक नर, सुराबिस्मरन फूल ।
५-यह मीनाई गगनप्रति, ग्रह कलाल निरमूल ॥
- २४९ सो०-जे तेहें उबमाद, मदिरापान समान सब ।
६-होय जात दुस्स्वाद, बहुत अपरमित विसन जब ॥
- २५० दो०-नरचित लाग्यो रहतहै, नित चिन्ता दरबार ।
७-मेरे लेखेहै सभा, सूने भौन मँझार ॥
- २५१ सो०-तन मन छायो पाप, नहिं अधीन सो दैवके ।
८-करन लोक सन्ताप, है कोटी अधिकारकी ॥

۷- کیفیت دنیا

صائب	ہیرت ہر کس در این عالم بقدر پیش است ہر کہینا تو درین ہنگامہ حیران میشتر	۲۴۴
ناسخ	کوئی غنچہ ہے کوئی گل ہے کوئی پژمرده ہے دیکھتے ہیں ہم تماشہ گلشن ایجاب و کاپا	۲۴۵
ذوق	گھما سے رنگ رنگ سے ہے رونق چین و بے اسے ذوق اس جہانکو ہے زیب اختلاف سے	۲۴۶
سبیل	مختلف احوال دنیا کا ہے ہر شام سے شب کو آبادی سرا میں دنکو دیرانہ رہا	۲۴۷
عالی	بادہ غفلت سے ہر فرد بشر شراب ہے چرخ مینائی بھی شکر خانہ خمار ہے	۲۴۸
ذوق	جتنے میں یان فر سے روش نشہ شراب ہو جاتے سمیزہ میں جو ٹرہ جاتے حدی میں	۲۴۹
غالب	ہے آدمی بجائے خود ایک محشر خیال ہم آئین سمجھتے ہیں خلوت ہی کیوں ننو	۲۵۰
صائب	مجبور حق نگر در آلودہ معاصی بدکردن خلایق بران اختیار است	۲۵۱

- २५२ दो०—नरपै हाथ पसार मत, हरिको द्वार विसार ।
९—प्रीतमको गिल्लाकरै, गैरन जाय गँवार ।
- २५३ दो०—सहि २ हिमहित कालगति, रहिनकरेजे आहि ।
१०—जो डुमदह्यो तुसारलगि, धुवाँन निकसति ताहि ॥
- २५४ सो०—चौथे पनमें आय, नरकी मति कटि जात है ।
११—दांतन बिन मुखपाय, मैं आपै बालक गिनुँ ॥
- २५५ दो०—बुरे परोसीसे सदा, सबकाहू दुख होय ।
१२—अधर उसै जो दशनतो, कौन अचंभो तोय ॥
- २५६ दो०—होय परोसीको जुहित, नीको सो उद्योग ।
१३—दगन नींदकारन करन, करत कथा उपभोग ॥
- २५७ दो०—फरत मनोरथ तिनहिंके, करत रहत कछु जोय ।
१४—राखे हैं कर तारने, करम करम गुन पोय ॥
- २५८ सो०—जा कारजपै कोय, साहस सों बाँधै कमर ।
१५—चाहै मूलहि होय, छोरै फूल बनायकै ॥

७ (अ) सुखदुःख ।

- २५९ दो०—भलो दुःख सो जानिये, पाछे करै हुलास ।
१—वा सुखसों जो अन्तमें, देय निरन्तर बास ॥

صائب	زدرحق بہ درخلق مبرجاحت خود شکوہ از یار باغیاری باید کرد	۲۵۲
ایضاً	نماند از سر دہر ہیا سے دوران در جگر آہم درختی را کہ سر با سوخت دودش بر نمی آید	۲۵۳
غنی	آدمی در عمد سیری بے خرد کرد غنی میشمارم طفل خود را رنجت تا دندان مرا	۲۵۴
ایضاً	بجز آزار از ہمسایہ بدکس نمی بیند بزد غنی استادگی دل بگزیدن نیت دندانرا	۲۵۵
"	سعی بہ راحت ہمسایگان کردن خوش است بشنود گوش از برائے خواب چشم افسانہ سائو	۲۵۶
احمدی	کچھ کرنے والے ہوتے ہیں مقصد میں بہرہ در رکھتا ہے کار ساز نے ہر فعل میں اثر	۲۵۷
سعدی	بہر کار سے کہ ہمت بستہ گردد اگر خار سے بود گلستہ گردد	۲۵۸

۷ (الف) رنج و راحت

سعدی	غم کن پیش شادمانی بری باز شادی کن پیش غم خوری	۲۵۹
------	--	-----

- २६० दो०-कहा जगत आराममें, होत न सुमन विलास ।
२-है बिहारके जोगपै, नहिं बिहार अवकास ॥
- २६१ सो०-देखहु बदरी सोच, कष्ट मूल संकोचहै ।
३-जिन नितज्यो संकोच, तिन पायो आराम फल
- २६२ दो०-बदरी भव सुख दुःखको, हरष सोच मतमान
४-कबहूँ वह कबहूँ यहो, रीत यहाँकी जान ।
- २६३ सो०-दुखअरुसुखके काल,इहि जग होत समान नहिं
५-निसभर रोवै लाल, दिया हँसे ऊषा छिनक ॥
- २६४ सो०-सुख सोवन कहें लोग, जानो सीस विकारसो ।
६-जाहि लगे यह रोग, सो सेवै बिस्तर सदा ॥
- २६५ सो०-जो सुख नहिं ठहराय, सो पूँजी पछतावकी ।
७-मेंहदी सुरंग बँधाय, आखिरकर भींडन परै ॥
- २६६ सो०-दुख न बिसर जन होय, मनको मुखके हँसनसों ।
८-बिहँसत बदन न तोय, मीठो होय गुलाबको ॥
- २६७ दो०-कहूँ रंग आरामको, नहिं जगके आराम ।
९-माली सालै सुमन उर, वधिक कीरको बाम ॥
- २६८ सो०-मोद सुरा नहिं लेस, या माटीके माठ घर ।
१०-यह धुनि उठति बिसेस, रीते नरगिस जामसों ॥

ذوق	اس گلستان جهانین کیا گل عشرت نہیں سیر کے قابل ہے یہ پیر سیر کی فرصت نہیں	۲۶۰
ایضاً	اسے ذوق تکلف میں ہے تکلیف سراسر آرام سے ہے وہ جو تکلف نہیں کرتا	۲۶۱
سوی	زربخ و راحت گیتی مرخجان دل مشو نورم کہ آئین جہان گاہے چنن گاہے چنان باشد	۲۶۲
غنی	مدت شادی و غم نیت برابر بجان گر شمع شبے خندہ صبح است دح	۲۶۳
ایضاً	خواب راحت در حقیقت مایہ درد سر است ہر کہ دارد این مرض پیوستہ صاحب بستر است	۲۶۴
"	عیشے کہ کنی ماند سرا یہ افسوس است این دست خوابستہ بر ہم زونی دارد	۲۶۵
صائب	نمی توان غم دل را ز خندہ بیرون برد ز خندہ روی گل تلخی از گلاب نرفت	۲۶۶
ناسخ	زنگ عشرت باغ عالمین نظر آتا نہیں گل کو گلچین کا خط بیل کو غم سیاد کا	۲۶۷
غنی	نشانی نیست ز چمنانہ خاک از می عشرت ز جام خالی ز گرسہن آواز می آید تو	۲۶۸

- २६९ दो०—सुख मदिरा तबते भई, करुई बिसवा बीस ।
११—गरल पियनको गगनको, कियो कटोराईस ॥
- २७० दो०—वा घरमें आनन्दको, रहै सदादर बन्द ।
१२—जा घर उठति तियानकी, नित उठि सदा बिलंद ।
- २७१ सो०—जग माटी ग्रह चित्त, खेम आस मत राखतू ।
१३—जान गराउ निमित्त, घरि यारची विरंच यह ॥
- २७२ दो०—चाहे फिरत खगोलहै, औ चाहे भूगोल ।
१४—पै नहिं ह्यां बिसराम थल, हमहि मिलनको डौल ॥
- २७३ सो०—जनम्यो जब दुखपाय, मैया हीकी कूखतें ।
१५—क्यों नाहक भटकाय, सुखकारन ह्याँ सुख कहाँ ॥
- २७४ दो०—बिधना उनके सीसपै, डारन लाय पहार ।
१६—पाहनसम जिनको दुसह, पुहुप पँखुरिया भार ॥
- २७५ दो०—काल अधिक दुख दरदकी, संभावना जुहोय ।
१७—आजहि तिहिको खेड्यो, कौन बतायो तोय ॥
- २७६ सो०—होते नाइहि धाम, सोग पीरके रंग जो ।
१८—गमन न हो तो श्याम, औ पिरथी पीरी नहीं ॥
- २७७ दो०—विषय विषे मनकी लगन, सकल सोगकी मात ।
१९—हम सनहित सम्बन्धकरि, जनति विपतिकुलतात

ذوق	پونچھین گرجھسے مئے عیش ہوتی کب سی تلخ کون جسدن سے فلک کا لہ نہ زہراب بنا	۲۶۹
سعدی	در خور می بر سر اسے بہ بند کہ بانگ زن از رو سے بر آید بلند	۲۷۰
صائب	از خاکدان دہر سلامت طبع مدار این بو تہ را برائے گذار آفریدہ اند	۲۷۱
ذوق	خواہ پھر تا ہے فلک اور خواہ پھر قی ہے زمین پر ہمارے واسطے یان منزل راحت نہیں	۲۷۲
الضآ	بطن مادر ہی سے جب پیدا ہوا تکلیف سے یان کہان راحت کہ تو کرتا ہے راحت کی طلب	۲۷۳
ناسخ	سر رہا طائر ان کے نہ اسے آسمان گرا جو برگ گل کو سمجھیں کہ سنگ گرا ان گرا	۲۷۴
صائب	فردا جو غم زیادہ زامروز میرسد امروز خوردن غم فردا چہ حاجت است	۲۷۵
ذوق	جو ترنگ رنج و ماتم کا بیان نمود ہوتا تو زمین نہ زرد ہوتی نہ فلک کہو ہوتا	۲۷۶
صائب	دل بستگی است مادر بہ ماتم کہ بہت حی زاید از تعلق ماہر غم کے کہ بہت	۲۷۷

७ (क) अपचय, उपचय ।

- २७८ दो०—चूर २ आपहि करहि, सोही पूरो होय ।
१—दरश करावन बालशशि, कर उठाय सब कोय ॥
- २७९ दो०—नहीं दीनता प्रकटते, बढि अधूरकी पूर ।
२—अन पैराको कर गहत, कर उठाइ बो कूर ॥
- २८० दो०—बदरी अवनति डारिसे, बीनो उन्नति फूल ।
३—साँस अधोगति बाँसते, कढ़त उच्च रस मूल ॥
- २८१ दो०—पूनोंसे बड़ दूजके, चाउ चन्द्रको होय ।
४—गाहक नहीं संसारमें, पूरन गुनको कोय ॥
- २८२ सो०—मुख कलंक नहीं जाय, सोरह कला मयंककर ।
५—कलाकुशलता पाय, सरथो न एको काज मम ॥
- २८३ सो०—अपचय उपचय साथ, रहत गगन मंडल तरे ।
६—सकल कला कर नाथ, कुढ़ि २ होत अदर्श सो ॥
- २८४ दो०—हमें अपूरन होनको, मा कारन अभिमान ।
७—जगमें प्रथम बड़ाउ जिहि, ताहि घटाउ निदान ॥

۷ ديب کمال و زوال

صائب	ہر کہ خود را بہ تمامی شکنند دست تمام ماہ برازین سبب انگشت نما سا ختم اند	۲۷۸
ایضاً	نیت ناقص را کمالے بہتر از اطوار عجز و شکنیہ ناشنا در دست بالا کردن است	۲۷۹
غنی	توان ز شناع تنزل گل ترقی چید نفس بہ شے چو فرو شد بلین میگردد	۲۸۰
ناسخ	مشتاق سبہین بدر سے افزون ہلال کے دنیا میں قدر دان نہیں اہل کمال کے	۲۸۱
غنی	بنور ماہ سیاہی ز روئے ماہ زلفت نیا دست بکار سے کمال خویش مرا	۲۸۲
صائب	ہر کمالے راز والے ہست در زیر فلک ماہ ناقص بدر تا گردید کا سپید گرفت	۲۸۳
عاجزہ	ہم اپنی بے کمالی پہ نازان ہین اسلیے جو صاحب کمال ہے اسکو زوال ہے	۲۸۴

७ (ख) दया, निष्ठुरता ।

- २८५ दो०—यहाँ बडी सौ गात, कर गहिबो आधीनको ।
१—लेहु असीसें तात, जब पावहु दुखियानकीं ॥
- २८६ दो०—करत बीनती धनिनसों, “सेवाको तय्यार” ।
२—दीनन सोंहूं पूंछिये, जब तब “का दरकार” ॥
- २८७ दो०—हरष हँसन मृदु कामना, तात तोय जो होय ।
३—पोंछत रहियो प्यार कर, अँसुवापर दग जोय ॥
- २८८ दो०—कर असीसपर तापते, श्रीप्रासाद दृढाय ।
४—पुस्ता बुढिया कूटिका, किसरा महल सहाय ॥
- २८९ दो०—केवल बाहु प्रताप बल, सरै न कोई कार ।
५—राजश्रीके पदरको, कर असीस रखवार ॥
- २९० दो०—राजश्रीकी नीँउ खुद, खोदे निठुर नरिन्द ।
६—परसेना निज प्रजाको, करै कुसासक निन्द ॥
- २९१ दो०—निज जनपै दुनियादया, भूलि करै नहिं तात ।
७—अग्नि होत्री गात कब, राखन अग्नि सिरात ॥
- २९२ दो०—अति कठोर जी जानिये, बाहिर कोमल जोया ।
८—ज्यों कपासमें पासही, दूरो विनौरो होय ॥

۱۷ ج، ترجمہ و سنگدلی

- ۲۸۵ مکر م جنس ہے بیان دستگیری نجانوں کی
 احمدی خرید کر ملین جتنی دعائیں نالواؤنگی
- ۲۸۶ منعمون سے کہتے ہو حاضر پے خدمت ہیں ہم
 ایضاً بیکسوں سے بھی کبھی پوچھا کرو کیا چاہیے
- ۲۸۷ ہو اگر دلو شکر خدیرب کی آرزو
 " غیر کے آنسو یہ شفقت سے پوچھا چاہیے
- ۲۸۸ قصر دولت پانڈار از دست ارباب دعاست
 صائب پشتبان طاق کسری کلمہ زال است و بس
- ۲۸۹ بزور یازو سے اقبال کار سے برنجی آید
 ایضاً نگہ دار و نگہ دست دعا دامان دولت را
- ۲۹۰ بدست خود کند بیداگر بنیاد دولت را
 " سنگرش کریگانہ ساز و خود رعیت را
- ۲۹۱ دنیا باہل خویش ترجمہ نمی کند
 " آتش امان نمی دہد آتش پرست را
- ۲۹۲ سنگین دست ہرگز باہر ملائیم است
 غنی پنہان درون پنہان مگر پنہانہ را

- २९३ सो०—गोफनलों मन होय, जाको पाहन निरदर्द ।
९—लरैं परस्पर कोय, तब सो नाचै हर्ष सों ॥
- २९४ सो०—जो पाहन चित होय, छातीते तिहि काढ नित ।
१०—या मारगमें तोय, गोफन राह बतायहै ॥

७(ग) मनुष्यपरीक्षा, गुणग्रहण ।

- २९५ दो०—भली कही यह सोचिकै, काहू चतुर सुजान ।
१—भागवानकी आंखको, भाग रसाइन जान ॥
- २९६ दो०—निरखत प्रथमबनायकै, दरपन दरपन कार ।
२—अपनेहू गुण दोषको, परखत गुणी विचार ॥
- २९७ दो०—गुणकी जाने खाग कब, जो आपहि गुण हीन ।
३—गुण गाहक बे होत जो, सकल कलान प्रवीन ॥
- २९८ दो०—मोती कूतै जौहरी, कंचनकसे सुनार ।
४—दुर्लभ नागर पुरुष सो, जो परखैं नरनार ॥
- २९९ दो०—सज्जनता गुण मिलतहै, नरहि मानसनमान ।
५—यह ओछे मन होय नहिं, ओछे तन नहिं हान ॥
- ३०० दो०—सज्जनता कछु और है, विद्या औरै बात ।
६—सुवा पढ़ायेहु विविधविधि, रहत विहंगम तात ॥

غنی	ہر کہ مانند فلاخن دل سنگین دارد رقصدا آندم کہ کسے را بکسے جنگ شود	۲۹۳
ایضاً	بود از سینہ بیرون کردنی آن دل سنگین است دلیل راہ خود گردان دیرین وادی فلاخن را	۲۹۴
	۷ (دو) مردم شناسی و قدر دانی	
البر الفضل	چہ نیکوزدند این مثل ہوشمندان کہ اک نخت است چشم بلند ان	۲۹۵
ذوق	بنا کے آئینہ دیکھے ہے پہلے آئینہ گر ہنرور اپنے بھی عیب و ہنر کو دیکھتے ہیں	
سودا	جسمین نموسے جو ہر جو ہر شتاس کب ہے جو صاحب ہنر ہے وہ ہی ہنر کو پرکھے	۲۹۷
ایضاً	گوہر کو جوہری اور صراف نر کو پرکھے ایسا نکوئی دیکھا وہ جو ہر کو پرکھے	۲۹۸
ذوق	آدمیت سے ہے بالا آدمی کا مرتبہ نو پست بہت یہ نہوا اور پست قامت ہو تو ہو	۲۹۹
ایضاً	آدمیت اور شے ہے علم ہے کچھ اور چیز کتا طوطے کو پڑھایا پردہ حیوان ہی رہا	۳۰۰

३०१ दो०-मलिन बहिर गति देखि मम, निन्दक चखमत तानि
७-फट्यो पिधान करहि कहा, असि असीलकी हानि ॥

३०२ सो०-साखा बिसवाबीस, रुख फेरै निजमूल तन ।
८-देखहु अपै सीस, फल दल तरवर चरनपै ॥

३०३ दो०-औगुन औरनके गिनै, आगे तेरे लाय ।
९-औगुन तेरे सो सही, और न पै लै जाय ॥

३०४ दो०-होय नेकतू और बद, बदरी कहे जहान ।
१०-वासों भलो कि होय बद, करै नेक अनुमान ॥

३०५ दो०-सज्जन जनको आदिते, मान घटत खल बीच ।
११-सुरगुरु ते ऊंचो रहत, सदा सनीचर नीच ॥

७ (घ) शत्रु, मित्र ।

३०६ दो०-निपुण सखा सम होतहै, जोड़ा कब निर्दोस ।
१-बसि गुलाब सँग आब बहु, पावै मणिते ओस ॥

३०७ सो०-भार रहित नित होय, छाँई जदपि पहारकी ।
२-क्षुद्र गुरुवते कोय, महिमा सम्पादै नहीं ॥

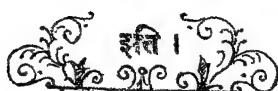
३०८ दो०-ऐसे नरते चित्तमें, अनुखन मानै कोय ।
३-चितवन परखै ताहि की, सखा जाहि को होय ॥

	<p>बाप چشم کم بین من ظاہر ذلیل را عیب از غلاف کهنه چیتنج اصل را</p>	۳۰۱
عنی	<p>ہر کجا فرع است آرد رو بہ اصل خود عنی سر بہ پاسے نخل آفر میگذارد برگ و بار</p>	۳۰۲
سعدی	<p>ہر کہ عیب دیگران بین تو آورد و شمر د بیگمان عیب تو پیش دگران خواهد برد</p>	۳۰۳
ایضاً	<p>نیک باشی و بدت گوید خلاق بہ کہ بد باشی و نیکت بنیتند</p>	۳۰۴
عالی	<p>ازل سے قدر نیکوں کی ہے کمتر زحل بالانشین شتری ہے</p>	۳۰۵
	<p>۴۵۷ دوست و دشمن</p>	
صائب	<p>بہ از بصحبت شایسته ترا کسیہ سے نمی باید ز قرب لاله از یا قوت ز نکلین تر بود دشمنم</p>	۳۰۶
عنی	<p>سایہ گر سایہ کوہ ہست سبک بہ باشد کب تکین نکلند سفد از اریاب و قار</p>	۳۰۷
سودا	<p>وہ شخص بار خاطر ہرگز نہ کسی کا جبکا ندیم ہو وی اسکی نظر کو پرکھے</p>	۳۰۸

- ३०९ दो०—जन मन सुख संचयभलो, संचयभलो न कोस।
४—निधनभलो जन होनसे, पीडित हत सन्तोस ॥
- ३१० सो०—देख ! आस जिय माँहिं, राखिन सम्पति मीतकी।
५—सीप अधर तर नाहिं, पानी मोतीमें घनो ॥
- ३११ सो०—अपनेसे उपकार, जान पराये को भलो ।
६—जलनिधि माँझ अगार, पियति सीपपै अनतपय ॥
- ३१२ सो०—कारज अटके तात, आस राखि जिन स्वज्जनकी।
७—खोलन नखन सकात, पोरनपै गँठें परीं ॥
- ३१३ दो०—यू सुफ संग सहोदरन, करी सुजग विरुघात ।
८—और कुटुम्बिन सों कहा, आसकरो पुनि तात ॥
- ३१४ दो०—भले बुरे में दीजिये, प्रतिरोधिनको अंग ।
९—छोर न उनहिं उतारमें, छाक्यो जिनके संग ॥
- ३१५ सो०—सहवासिन सँग मान, हेल मेल अतिमति करै ।
१०—खटकत शूल समान, लोचनमें अटकत पलक ॥
- ३१६ सो०—गाफिल संगति पाय, नष्ट होत कर तूत सब ।
११—सोय एक पग जाय, सकहि दूसरो फिर न चलि ॥
- ३१७ सो०—पालो डारिन मोर, गगना हिय हित मीत सों ।
१२—डुम तुसार ज्यों खोर, त्यों जरि जैहों बात लगि ॥

سعدی	دل دوستان جمع بہتر کہ گنج خزانہ تھی بہ کہ مردم بہ رنج	۳۰۹
	دیکھو صحبت کی دولت سے نہ رکھو چشم امید لب صدف کے تر نہیں ہر چند گوہرین ہر آب	۳۱۰
غنی	فیض از ریگانہ خواہم نے از آشنا چون صدف در بحر آب از جادوگر بخوریم	۳۱۱
ایضاً	کشاد کار خود توان طبع از آشنا کردن کجا ناخن تواند بندلاز انگشت و اگر دن	۳۱۲
صائب	یوسف مہر شنیدی کہ از خوان چکشید چہ توقع ز غزیزان و گر باید داشت	۳۱۳
ایضاً	در نوش و شیش کن بخر یافان موافقت باہر کہ ہم پیالہ شدی ہم خسار باشو	۳۱۴
غنی	مکن باد وستان از آشنائی اختلاط افزون در آید چون درون دیدہ شرکان خسار میگردد	۳۱۵
ایضاً	رفیق اہل غفلت ہر کہ شد از کار سیاند جو پاسے خفتہ پاسے دیگرانہ تو سیاند	۳۱۶
ذوق	سر و مہرون سے فلک ڈال نہ پالا کہ بن آگ نخل سر ماروہ کی طرح سے جل جاؤں گا	۳۱۷

- ३१८ सो०—भये भावसों कोय, जगत ग्रंथ नहिं एक मन
१३—मनके अखरा दोय, रहत परस्पर अनमने ॥
- ३१९ सो०—मधुलों मधुर दिखाय, स्वारथ साधत हलाहल
१४—बैरी मृदु बतराय, बैठै जिन बेखटक है ॥
- ३२० सो०—बैरी नबैजु आय, निश्चय दुख फल लाय है ।
१५—फरसा लागै पाय, फरस देय करि तरवरहि ॥
- ३२१ दो०—बैरी सों नय विनयकरि, बचहिंन प्रान गँवारा
१६—लच्यो गात बुढरानको, सकहिन जम कोटार ॥
- ३२२ सो०—बदरी सुख मत मान, बैरीके विस्मरणको ।
१७—लखि कमानकी बान, तकति निसानो पीठदै ॥
- ३२३ सो०—अरि घर कबहुँ न जाय, जीदानी जगको जदपि।
१८—परतहि तुरत बुझाय, अनल सुधा जल विमलहू ॥
- ३२४ दो०—दीप अनूप प्रताप अरि, कबधों सकहि बढ़ाय।
१९—मानिक अनल कदापि नहिं, जलके भय सकुचाय



ذوق	صفحہ دہر پہ اکل نہوا ایک سے ایک ۶	۳۱۸
صائب	دل کے دو حرف ہیں سو وہ بھی جدا کیے ایک	
	سیکند زہر ہلاہل کا رخو درائیں تو	۳۱۹
غنی	از گزند دشمن شیرین زبان غافل بنناش	
	نبود گل تو وضع دشمن بجز گزند	۳۲۰
	یا بوس نیشہ اکلند از پانہال را	
ایضاً	تقوان بروز دشمن بتواضع جانرا	
	قامت خم نہ رواند از اجل پیران را	۳۲۱
”	ہر چند تغافل کند امین مشوار خصم	
”	پیوستہ بود پشت کمان سوئے نشاند	۳۲۲
”	مرو در بزم دشمن گر چه جان بخش ست عالم را	
	کہ میرد آتش اردو چشمہ آب بقا افتد	۳۲۳
	ضرر پہونچا سکے کب شمع اقبال کو دشمن	
	نہو وے آتش یا قوت کو اندیشہ پانی کا	۳۲۴

تمام شد



खेमराज श्रीकृष्णदासके
“श्रीचेंकटेश्वर” छापखानेमें
छपा - मुंबई.

टिप्पनी ।

मंगल, हरिस्तुति ।



न

—‘जल’ यह शब्द मूलसे अधिक है इस चरणको यदि ‘जल थल व्योमअपार’ इति, पढा जाय तो भी उत्तम है.

१—‘अजाँ’ (ازان) मसजिद (مسجد) में निमाज (نماز) पढनेके हेतु लोगोंके एकत्र करनेके निमित्त जो पुकार मुझा करता है.

—‘मुहर’ असरफी (اشرفی) मछलीके मित्ने तदाकार होतेहैं.

१ —‘छवि’—प्रकाश—‘भाश्छवि द्युति दीप्तयः’ इत्यमरः

” ‘तूर’ (طور) पहाड, विशेषतः ‘शाम’ देश (Asiatic Turkey) का ‘सेना’ (سيناء) (Sinai) नाम पर्वत जिसपर परमेश्वरने तडित स्वरूपमें हजरत मूसा पैगम्बर (حضرت موسى पैगम्बर) (Moses) को दर्शन दियेथे; उस दुःसह

पृ०

नं०

तेजके कारण 'मूसा' अचेत होगये और पर्वत जलकर सुरमा बन गया—यहाँ कवि का तात्पर्य यह जान पडता है कि श्री गंगा की तरंग छवि अवलोकन करि जीव आनंद प्रवाहमें निमग्न हो जाता है और उस तेजसे जलकर मनुष्यके अघ शैल तत्क्षण भस्म हो जाते हैं.

४ १२—'गगन'—फारसी उर्दू कविगण 'आस्मान' 'चख' 'फलक' इत्यादि गगनवाची शब्द 'दिव' के अर्थ में प्रयोग करते हैं. कारण यह ज्ञात होता है कि जो भी, हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह (حضرت محمد رسول الله) ने ज्योतिषशास्त्र मिथ्या बताया तो भी कदाचित् किसी पूर्व विश्वासका प्रमाणदायी यह वाक् संप्रदाय अभीतक प्रचलित है.

अबके यूरोपीय सिद्धांत तथा हमारे जूने शास्त्रप्रमाण के विरुद्ध इन लोगोंका यह कथन था कि गगन एक पदार्थ है जिसके ७ पुडत (सप्त ग्रहोंके स्थानरूपी) हैं—यह आडंबर तारागण, नक्षत्र, ग्रहादि सहित

पृ०

अचला पृथ्वीके चहुँओर निरंतर परिभ्रमण करता रहता है.

इस दोहेका भावार्थ यह है कि 'गगन' को गमनसेही चिरकाली होनेपर भी ऐसी परमशक्ति प्राप्त होगई है जो मनुष्यादिकके भाग्यको बिगाड़ और बना सकताहै, तो इसीके समान यदि तरुणपुरुष नित्यपरमेश्वरकी तलाशमें लगा रहै तो उस सर्व शक्ति मानके प्रसाद से क्या न प्राप्त होगा.

विनय ।

४ १५ - मुखमुकुर - توجت کردن و حاصل شدن = رودادن -
अर्थात् ध्यान देना, आदर करना वा प्राप्त होना - 'मुँह लगाने' से मिलता हुवा यह फारसी वाक् संप्रदाय 'मुँह देना' है. *دیکھو شکرستان*

उपासना ।

८ ३ । - होप - अंगरेजी शब्द है. Hope - आशा.

पश्चात्ताप ।

१० ३ । - आँख - आँकना, कूतकरना, अन्दाजकरना.

पृ०

नं०

१०

३६-काबा-(کعبه)-'मक्का'(مکه معظمه)का जग-
द्विख्यात मंदिर है।

जमजम(زمزم)'काबे' के पास एक
खारी कुवाँ है जिसके जलको 'मुसलमान'
लोग 'गंगोदक' के समान पवित्र मानते हैं।
खारीपानीकी आँसुवोंसे सादृश्यता स्पष्ट है।

१२

४९-पाहन-(سنگ اسود)'काबे' में एक काला
पत्थर है जिसे यात्री लोग चूमते हैं-कोई
कहते हैं कि उसमें किंचित् स्वेतचिह्न भी हैं,
और संसारमें ज्यों २ पाप और दुराचारकी
वृद्धि होती जाती है त्योंही त्यों वह सफेदी
लोप होती जाती है। जब वह निश्शेष
अस्तित्व हो जायगा तबहीं (قیامت) प्रलय
होगी। कदाचित् इसी को 'मकेश्वर महादेव'
कहते होंगे। () ()-

”

”

शेखजी-मुसलमानों की चार प्रसिद्ध जाती
हैं۔ شیخ-خواجہ پیر۔ (ازغیاث) پٹان و نزل و سید و شیخ
स्वामी, वृद्ध, गुरु बहुधा कवितामें 'शेख'
(شعیب) धर्मशास्त्र प्रतिपादक के अर्थमें

पृ० नं

प्रयोग करते हैं और प्रेममार्गी कविजन विचारे शेखजीका इसीकारण यथोचित उपहास करते हैं. 'मुहम्मद' साहब शेखथे. (سید پشوا) सिरधरा; (مترقوم) मुखिया; (سردار) राजमान्य; यह कौम ब्राह्मणोंके तुल्य पूजनीय मानी जाती है. 'हजरतअली' और उनके वंशज 'सैयद' कहलाते हैं और शिया (شیع) मुसलमानोंमें उनकी प्रतिष्ठा अधिक है.

(محرम) मुहर्रममें (تسع) ताजिया 'अली' के पुत्रपौत्रादिके स्मरणार्थ जिनको (یزید) 'यजीद' ने 'करबला' में वध कियाथा, बनाये जाते हैं; (مغول) मुगल यह 'तुर्की' भाषाका शब्द है; (قوم مشهور) (غياث اللغات) में (مغول) के अर्थ (قوم مشهور) विख्यात जाति; (عمدة ترک) तुर्कोंकी एक श्रेष्ठ जाति; (سارو دل) भोला पुरुष; (شیر) छलिया, लिखे हैं.

'पठान' शब्द हिन्दी ज्ञात होता है क्योंकि 'अरबी' 'फारसी' वर्णमालावोंमें 'टवर्ग' नहीं है.

पृ०

नं०

पठानलोग क्षत्रियोंके सम तुल्य समझे जाते हैं यह शब्द 'काबुली' भाषाका 'पै ठान' बताते हैं अर्थात् पाउँजमानेवाला.

१२

४९—जौक—कविका उपनाम

”

” बुत—मूर्ति; प्रियतम, निष्ठुर.

ज्ञान ।

१४

५१—अभेद—अद्वैत.

१६

६४—६४—५—यह दोनों 'सोरठे' परस्पर मिलेहुवेहैं

१८

७०—परमसुजान—मूलमें (اطلاطون شو) 'फलातूं हो'—
(फलातूँ Plato) 'यूनान' Greece
देशका एक परम प्रसिद्ध तत्त्वज्ञ और चतुर
विद्वानथा.

”

७२—अलि—आली वा भ्रमर (चक्रितमन)

परमार्थ साधन ।

२०

७६—असत्ता—अभाव, अहंकारका नाश देखो नं०
१९३ तथा २०९

”

७७—जंगारी सिखर—जंगारी रंगका शिखराकार
आसमान.

- पृ० नं
 २० ८' -चपल-पारा; -'चपलोरसः सूचश्चपारदे'
 इत्यमरः-
 २२ ८' -वीग-सं० वृकका अपभ्रंश-भेडिया.

मनशुद्धि ।

- २४ ९ :-साँचा-मोमबत्ती साँचेमें ढाली जाती है। (شع)
 वास्तवमें मोमका नाम है; परंतु बहुधा बत्ती-
 के काममें मोमका उपयोग होने के कारण
 'शमा' दीप को कहने लगे.

संतोष ।

- २८ ११ ।-मूँगा की जड़ें हाथकी अंगुलियों के सदृश-
 होती हैं अतएव उन्हें फ़ारसीमें (पंजए
 मिर्जा) मूँगे का पंजा कहते हैं.
 ११ ४ -नझूद-इब्राहीम-नझूद पादशाहके राज्यमें
 मूर्ति पूजन प्रचलितथा-इब्राहीम पैगंबरने
 बचपनमें एक दिन अपने पिता 'आजर'(آزر)
 के कारखानेकी सब मूर्तें खंडन करडालीं
 और बापने जब कारण पूँछा तो निगुण उपा-
 सना का उपदेश करने लगे, जब यह झगड़ा

पृ०

१०

बढते २ पादशाहतक पहुँचा तो उसने अनेकयत्न करने के उपरांत निरुपाय होके अपने पूर्वजों के धर्म त्यागका दंड इब्राहीम को देना निश्चय किया-और इस हेतुसे उनको प्रज्ज्वलित अग्निमें डलवा दिया; परंतु हरि कृपासे ज्वाला शांत होकर शीतल सौगंध पुष्पवाटिका बनिगई-अंग्रेजीमें इब्राहीम को Abraham और नम्रूद को Nimrod कहते हैं 'इंजील' 'कुरान' इत्यादिमें इनकी कथा सविस्तार वर्णित है. 'प्रह्लाद' 'हिरण्य कशिपु' के आख्यान से यह कथा मिलती हुई है इसलिये दोहे के उत्तरार्ध को यदि 'बाग भई प्रह्लाद को हिरनाकुशकी आग' पढ़ें तोभी ठीक है.

२८ ११७-कल्पतरु-पहिले (لولى) पाठ प्राप्त हुआ था, इस लिये, 'कल्पतरु' उसका तर्जुमा किया गया क्योंकि-'तूबा' नामक एक वृक्ष 'बहिष्त' में बताते हैं; जिसकी एक २ शाखा प्रति मंदिरमें वहां पसरी हुई है और जिसके

पृ०

नं

फलोंमें यह मुणहै कि खानेवाले को यथेच्छ-
स्वाद मिलताहै-परंतु(میراثی)में(میراثی)पाठपाया-
गया 'यदे तूला'=लम्बे हाथ, अर्थात् कला
कौशल्य-अतएव उत्तरार्द्ध दोहेका पाठ बद-
लकर 'असन बसन हित हात, लम्बे जग
त्यागीनके' अथवा 'उपजीवन हितहात,
कुशल होत त्यागीनके' होसकाहै

तृष्णा लोभ ।

३४ १३ १-कैदफिरंग-जब 'मुसलमानों' और 'ईसाइयों'
का परस्पर धर्म सम्बन्धी संग्रामचालूथा
(Wars of Crusades)तब जो 'मुस-
लमान' 'फिरंगियों' के हाथ पड़जातेथे उन
विचारों का छुटकारा अत्यंत कठिन प्रयत्नों
से होताथा-अतएव मुसलमानों में ऐसा वाक्
प्रचार प्रचलित होगया कि अति क्लिष्ट
स्वेदको 'कैद फिरंग' की उपमा देने लगे.

सम्पन्नता ।

३६ १४ १-मदन पदार्थ-मदन=काम=इच्छा' इच्छा ही
सम्बन्ध (تعلق) का कारण भूतहै.

- पृ० नं०
 ३८ १५६-ज़रदार-ज़र(زر)=धन, स्वर्ण, पुष्प, मकरंद;
 इस पदमें श्लेष स्पष्ट है.
 १५९-द्विज-यह मूलसे अधिक है परंतु इसका
 श्लेषार्थ दोहेके भावार्थ में खिपताहै
 द्विज=पक्षी; ब्राह्मण.

उदारता ।

- ४० १६०-यज्ञ-(غياث اللغات)में(يار)शब्दके अर्थ यह लिखे हैं
 بزرگترین معنی منفعت غیر مربوط غرض مقدم داشتن این کمال درجه سخاوت
 विवेक करना अर्थात् दूसरे के लाभको
 अपने अभीष्ट से बढ़कर समझना
 और यह दातृत्वकी सीमाहै. (Forbes
 Dictionary) में इस शब्द के माने-
 (Offering)—‘बलिप्रदान’ दिये हैं-यज्ञ से
 यहाँ तात्पर्य दानरूपी यजन से है-पूर्वार्ध को
 यदि यों पढ़ें तो भी उचित है-‘दान तत्त्वके
 मरम को, जानो चाहे जोय’-
 १६२-साहसदान-(صوفی)सूफी, ईश्वरप्राप्त्यर्थ
 जग त्यागको ‘साहस’ कहते हैं.
 ४२ १६९-हातिय-‘तय’(ت)नम्रमें ‘हातम’एक अत्यंत

पृ०

दानशूर पुरुष हुवाहै; इसी कारण उसे 'हातमे ताई' कहतेहैं-उसने ७महानचमत्कारिक दानकियेथे-किस्सए 'हातमताई' एक-विख्यात मनरंजक पुस्तक है उत्तरार्धको यों पलट दिया जाय तोभी अनुचित न होगा. "करण तुल्य निजदान की, चरचा जिन करिवाल".

वैराग्य ।

- ४४ १८ :- पूत=पवित्र, निर्मल.
 ४६ १८ :- हंस-हंस'क्षीर और नीरको पृथक् करदेताहै; और परमार्थी लोग हंस'आत्मा'को कहतेहैं.
 " १९ :- सबन-शब्द=मृतक.
 " " अभाव-असत्ता-देखो नं० ७६ की टिप्पनी

जीवन मरण ।

- ४८ १९ :- चोरतकाळ-अधिक वय होके तरुणाईकी लालसा में कम उमर बताते हैं.
 ५० २० :- फलकं-(क)आसमान देखो नं० १२की टिप्पनी.
 " २० :- देही=देहधारी, जीवात्मा.

- पृ० नं०
 ५० २०९-व्यायाम-स्वास्थ्यके हेतु चलना फिरना.
 ५२ २११-(सुदा) नेकहाहै,
 (सुदा जहाँ को कौन कچه नैलिया + बाताहोन एक मिन ल प्र आरु लोम)
 ” २१२-वापी-बाउड़ी.
 ” ” तडाग-तालाब, सरोवर.

आदर सत्कार ।

- ५४ २२६-बुदबल-‘बुद्धिबल’ का ‘मरहठी’ अपभ्रंश
 मालूम होताहै=शतरंज; ‘चलत २ सतरंज
 में प्यादा होत वजीर’
 ” २२७-चसक-‘चषक’पानपात्र.

- ५६ २२८-पिंड-लोहा-‘लोहोऽस्त्रीशस्त्रकंतीक्षणं पिंड-
 काला यसाऽयसी’ इत्यमरः

अभिमान, दैन्य ।

- ५८ २३७-दोउपाट-मुसलमानी ‘शरएशरीफ’(धर्मशास्त्र)
 के मतानुसार आरोपके सिद्ध करनेके लिये
 कमसेकम दो साक्षी चाहिये.

सांसारिकगति ।

- ६० २४५-अमूल-श्लेषार्थ-बहुमूल्य तथा निर्मूल-
 मूलमें‘ईजाद’निर्माण है, उसमें भी यह श्लेष
 घटित हो सका है.

पृ०

नं०

सुख दुःख ।

- ६४ २६०-आराम-बाग.
 ” २६८-माठघर-जिस ठौर मद्यसे भरे बड़े २ बरतन रखते हैं.
 ६६ २६९-‘पीने’का करता मूलमें ‘जगत्’ है और ‘दोहे’में व्यंगार्थ स्पष्ट है.

अपचय उपचय ।

- ६८ २७८-चूर चूर-(*خوشکلی*) ‘दैन्य’ नम्रशीलता.
 “दया, निष्ठुरता” ।

- ७० २८८-किसरा-‘ईरान’देशमें एक बादशाह ‘नौशेर्वा’ नाम का बड़ा न्यायशाली हुवा है, इसी कारण उसको (*زشتیران عالم*) कहते हैं. उसीका नाम ‘किसरा’ है एक समय उसने एक महल बनवाया था जिसकी दीवारकी सीधमें एक गरीब बुढिया की झोंपड़ी आती थी-बुढिया झोंपड़ी छोडने पर राजी नहीं होती थी-जब बादशाह को उसके हठकी सूचना हुई तो उसने अपने महल की दीवार टेढी करके बुढियाका

घर बचा देने का हुक्म दिया, ऐसी २ अनेक कथाएँ प्रस्तुत हैं.

शत्रु मित्र ।

७४ ३०६-जोड़ा-यह 'रसायनियों' की परिभाषा का शब्द है अधिकांश सस्ती धातुमें थोड़ी कीमती धातु मिलाके सबको बहुमूल्य बना-लेनेको 'जोड़ा' बनाना कहते हैं-दूसरा अर्थ स्पष्ट है.

७६ ३१३-यूसुफ़-हज़रत याक़ूब (حضرت يعقوب) पैगंबरके ७ पुत्र थे-सबसे कनिष्ठ 'हज़रत यूसुफ़' पर अत्यंत स्वरूपवान और अंशधारी होनेके कारण पिताका पूर्ण स्नेह था-ईर्ष्या दग्ध ज्येष्ठ भ्राता इनको एक दिन पितासे छल करके जंगलमें लेगये और वहाँ एक अंध कूपमें ढकेल दिया और उनके वस्त्र रुधिरमें रंग लाये-बापसे कहि दिया कि यूसुफ़ को भेडिया खागया-इनको एक सौदागरने 'मिश्र' देशमें बेचा-वहाँ बज़ीरकी स्त्री 'जुलेखा' उनपर आसक्त होगई तो, क़िरस्ता प्रसिद्ध है.